

डॉ. अल फुहर, एक्लेसिएस्टेस, सत्र 8

© 2024 अल फुहर और टेड हिल्डेब्रांट

पिछले व्याख्यानों में, हमने एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक के प्रमुख रूपांकनों को देखने में समय बिताया है।

और मेरा मानना है कि इस प्रकार का दृष्टिकोण सभोपदेशक की पुस्तक के लिए एक उपयुक्त दृष्टिकोण है। सभोपदेशक इस अर्थ में बहुत चक्रीय है कि आपको पूरी किताब में बार-बार आने वाले रूपांकनों को दोहराया जाता है। स्टॉक शब्दों और वाक्यांशों के साथ-साथ जिन्हें हमें समग्र रूप से पुस्तक के अर्थ को सटीक रूप से समझने में सक्षम होने के लिए समझना चाहिए।

इसका संदेश इन वाक्यांशों और इन विषयों की सटीक समझ पर निर्भर है। और इसलिए, एक विषयगत दृष्टिकोण उपयुक्त है, लेकिन मुझे लगता है कि शायद इसकी कमी होगी यदि हम सीधे पाठ को रैखिक तरीके से निपटाने में कुछ समय नहीं बिताते। एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक के पहले अध्याय से बारहवें अध्याय तक चलते हुए।

इसलिए, इस व्याख्यान में, मैं अध्याय एक से छह तक की चल रही प्रदर्शनी में समय बिताना चाहूँगा। और फिर अगले व्याख्यान में, अपने अंतिम व्याख्यान में, हम एक्लेसिएस्टेस या कोहेलेट की पुस्तक के अध्याय सात से बारह तक की एक सतत व्याख्या करने में समय व्यतीत करेंगे। आप मुझे इस चालू प्रदर्शनी में बार-बार उन शब्दों का प्रयोग करते हुए सुनेंगे जिनसे मैंने आपको पहले के व्याख्यानों में अवगत कराया है।

और इसलिए हिब्रू शब्द, वे स्टॉक शब्द जो कोहेलेट के लिए बहुत अनोखे हैं, जो धर्मशास्त्र और कोहेलेट के संदेश में बहुत महत्वपूर्ण हैं, हम उपयोग करने जा रहे हैं। मैं एनआईवी अनुवाद को पढ़ने जा रहा हूँ, लेकिन फिर से, मैं इनमें से कुछ कीवर्ड को शामिल करूँगा और इस चालू प्रदर्शनी में आगे बढ़ते हुए थोड़ी सी रनिंग कमेंटरी करूँगा। तो, सभोपदेशक अध्याय एक और पद एक।

दाऊद के पुत्र, यरूशलेम के राजा, गुरू के वचन। और फिर, शिक्षक हमारे कोहेलेट व्यक्ति हैं। वैसे, यह कुछ ऐसा है जिसके बारे में मुझे नहीं लगता कि मैंने पिछले किसी व्याख्यान में चर्चा की है, लेकिन इस पुस्तक का हिब्रू शीर्षक कोहेलेट है।

इसलिए, पुस्तक का शीर्षक इस प्रमुख व्यक्ति, कोहेलेट के नाम पर रखा गया है। एक्लेसिएस्टेस वास्तव में हिब्रू कोहेलेट के ग्रीक अनुवाद सेप्टुआजेंट से आया है। और आप चर्च संबंधी या एक्लेसिया, एक सभा, एक सभा की उस भावना को प्राप्त कर सकते हैं जिससे कुछ लोग नए नियम के धर्मशास्त्र, चर्च के सिद्धांत, चर्च के सिद्धांत के अपने अध्ययन से परिचित हो सकते हैं।

और इस प्रकार, आपको एक सभा या सभा का यह एहसास होता है। याद रखें, कोहेलेट शब्द का अनुवाद एनआईवी शिक्षक या किंग जेम्स वर्जन द्वारा उपदेशक के रूप में किया गया है, वह शब्द हिब्रू क्रिया, कहल का एक सहभागी रूप है, जिसका अर्थ है इकट्ठा करना या इकट्ठा

करना। और जैसा कि मैंने पहले नोट किया है, सवाल यह बन जाता है कि क्या कोहेलेट वह है जो लोगों को इकट्ठा करता है या उन्हें सिखाने के लिए इकट्ठा करता है? यह अध्याय 12 में उपसंहार द्वारा निहित है, लेकिन साथ ही, हम पाते हैं कि शिक्षक वह है जिसने ज्ञान इकट्ठा किया और एकत्रित किया।

और इसलिए, कुछ अर्थों में, वह दोनों हैं। वह ज्ञान इकट्ठा करने वाला है और फिर वह लोगों को ज्ञान बांटने वाला है, कोहेलेट। हम पूरी किताब में कोहेलेट को पहले व्यक्ति के साथ-साथ तीसरे व्यक्ति में भी संदर्भित पाते हैं, और इस प्रकार यह एक्लेसिएस्टेस के हमारे पढ़ने में शाब्दिक रूप से कुछ अनूठी विशेषताएं जोड़ता है।

तो, ये कोहेलेट, उपदेशक, शिक्षक के शब्द हैं। कुछ लोग उसकी पहचान सुलैमान से करते हैं, जिसका परिचय यहाँ दिया गया है, वह यरूशलेम का राजा, दाऊद का पुत्र था। और निश्चित रूप से, हम कोहेलेट के साथ एक सोलोमोनिक पहचान देखते हैं, भले ही पुस्तक में सोलोमन का कभी भी नाम से उल्लेख नहीं किया गया है।

उनका परिचयात्मक वक्तव्य, हेवेल्स का हेवेल्स, एनआईवी अर्थहीन पढ़ता है, केजेवी वैनिटी, कुछ अनुवाद, व्यर्थता। और हमने इस कीवर्ड, हेवेल, को पहले भी देखा है। जब हम इसे यहां पूरे पाठ को पढ़ते समय देखेंगे तो मैं इसका नियमित रूप से उपयोग करूंगा।

हेवेल्स का हेवेल्स शिक्षक कहते हैं, कोहेलेट, पूरी तरह से हेवेल, सब कुछ हेवेल है। यह वास्तव में अतिशयोक्ति है, और इसलिए मूल रूप से, वह पुस्तक की शुरुआत से ही उद्घोषणा और निर्णय दे रहा है, जिससे हेवेल की दुविधा के लिए मंच तैयार हो रहा है। और जैसा कि हमने पहले देखा है, भारीपन पतित दुनिया के लिए एक प्रकार का प्रतीक बन जाता है और वह सब कुछ जो पतित दुनिया में अनुभवात्मक और अवलोकन के रूप में होता है।

बुद्धिमान व्यक्ति को इस बात पर बहुत दुःख होता है कि वह अपने आस-पास जो कुछ भी देखता और अनुभव करता है वह इस गिरी हुई स्थिति, इस भारीपन से व्याप्त प्रतीत होता है। और वह समस्या का समाधान करने में सक्षम नहीं है। और इसलिए, जैसे-जैसे हम पाठ से निपटते हैं और जैसे-जैसे यह सामने आता है, हम एक खोज में, एक यात्रा में उसके साथ शामिल होने जा रहे हैं।

आरंभिक प्रश्न में, जिसे मैं महज़ एक अलंकारिक प्रश्न के बजाय एक प्रश्नवाचक प्रश्न कहूंगा, पद 3। मनुष्य सूर्य के नीचे जो परिश्रम करता है, उससे उसे क्या लाभ होता है? यहां गेन शब्द हिब्रू शब्द यिट्रोन है। मैं इस शब्द को हेवेल की दुविधा का समाधान समझता हूं। अब मुझे पता है कि इसमें थोड़ा अर्थ संबंधी खिंचाव है, लेकिन फिर भी कोहेलेट उन शब्दों के साथ काम करने की प्रवृत्ति रखता है जो हमें आवश्यक रूप से शब्दकोषों और शब्दकोशों में नहीं मिलते हैं।

यिट्रोन शब्द का अर्थ अधिशेष या लाभ या लाभ है, जैसा कि आप यहां एनआईवी अनुवाद में देखते हैं। यह कुछ ऐसा है जिसे बाद में छोड़ दिया जाता है, और इसलिए व्यापारिक लेनदेन में लाभ शब्द एक संदर्भ की तरह है। लेकिन कोहेलेट उस अर्थ में, उस तरह के संदर्भ में इस शब्द का उपयोग नहीं कर रहे हैं।

पुस्तक में भारीपन के विचार को इतना सामने और केंद्र में रखते हुए, ऐसा लगता है कि जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं, यिट्रोन शब्द किसी चीज़ के लिए इस प्रकार का संकेत लेता है जो दुविधा का समाधान करता है। कुछ ऐसा जो इस दुनिया की विशालता से परे तक फैला हुआ है जो वास्तव में जीवन के पतन की समस्या का समाधान ला सकता है। अब हम बाइबिल धर्मशास्त्र में जानते हैं, और जैसे-जैसे हम धर्मग्रंथ के बाकी हिस्सों में अपना विस्तार करते हैं, हम पाते हैं कि ईश्वर भारीपन का समाधान प्रदान करता है।

वास्तव में, रोमियों अध्याय 8 में, हम पाते हैं कि पॉल कहता है कि यह भ्रष्टाचार जिसे हम वर्तमान दुनिया में अनुभव करते हैं, अंतिम खेल नहीं है। सृष्टि की मुक्ति है, और निश्चित रूप से मानवता की मुक्ति है, स्वयं को मुक्त किया गया है, जिसका वर्णन रोमियों अध्याय 8 और अन्यत्र, विशेष रूप से नए नियम में किया गया है। लेकिन कोहेलेट आवश्यक रूप से चीजों को उस पूर्ण रहस्योद्घाटन परिप्रेक्ष्य से नहीं देखता है।

वह बस सूर्य के नीचे जीवन का अवलोकन कर रहा है, जैसा कि एक बुद्धिमान ऋषि कर सकता है, और यह भटके हुए दृष्टिकोण से नहीं है। यह निश्चित रूप से किसी मूर्तिपूजक के दृष्टिकोण से नहीं है, कम से कम जब हम एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक पढ़ते हैं तो हमें उस तरह का संकेत नहीं दिखता है। लेकिन यह एक सीमित परिप्रेक्ष्य है, और ज्ञान स्वयं सीमित है क्योंकि ज्ञान का कार्यान्वयन एक नश्वर प्राणी द्वारा किया जाता है।

कोहेलेट दैवीय नहीं है, और वह चीजों को उस तरह नहीं देखता जैसा भगवान देखता है, और यह तथ्य कि वह भगवान द्वारा की जाने वाली हर चीज को नहीं देखता है, वास्तव में झुंझलाहट को बढ़ाता है क्योंकि एक आदमी के रूप में जीवन की गिरावट की समस्या को हल करना उसकी समझ से परे है। तो लक्ष्य, खोज, वास्तव में, यह कुछ दिलचस्प है, यूजीन पीटरसन की व्याख्या, संदेश, जैसा कि वह एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक की व्याख्या करता है, वह कोहेलेट को खोजकर्ता के रूप में संदर्भित करता है, और वह वास्तव में हेवेल शब्द का अनुवाद करता है, धुआँ। और इसलिए उसका परिचय होगा, धुआँ, धुआँ, सब धुआँ है, खोजकर्ता कहता है।

और इसलिए हम इस तरह की खोज, इस यात्रा को देखते हैं, मैं इसे एक ज्ञान यात्रा कहूंगा, यह देखने के लिए कि क्या कुछ ऐसा है जो दुविधा को हल करता है, सबसे बड़ी दुविधा जिसे सभी मानव जाति, सभी मानव जाति अनुभव करती है, और वह हमारा पतित नश्वर है। स्थिति। तो मनुष्य के श्रम, उसके अमल से क्या यिट्रिम, क्या लाभ, क्या समाधान मिल सकता है? अब यह शब्द अमल पुराने नियम में कहीं और पाया जाता है, यह सामान्य अर्थ में काम और परिश्रम को संदर्भित करता है, लेकिन यहां एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में, ऐसा लगता है कि इस हेवेल अनुभव में किए गए प्रयासों का संग्रह या किया गया है कि हम सभी एक गिरी हुई दुनिया में रहते हैं, यह देखने के लिए कि क्या कोई अमल, एक काम, एक परिश्रम, एक प्रकार का प्रयास, कोई समाधान प्रदान करता है जो कब्र से परे रहता है। और हम पाते हैं कि कोहेलेट को पता चला कि चाहे आप थोड़ा सा संग्रह करें या बहुत अधिक संग्रह करें, चाहे आप प्रयास करें और श्रम करें और मेहनत करें, या चाहे आप बस जीवन भर यात्रा करें, किसी भी तरह से, यह चलता है, आप इससे आगे कुछ भी नहीं ले जा सकते तुम कब्र तक।

किसी भी मामले में, इस प्रारंभिक प्रश्न से परे, यह पूछताछ प्रश्न जो वास्तव में खोज निर्धारित करता है या कोहेलेट जो खोजना चाहता है उसके लिए हमारे सामने यात्रा निर्धारित करता है, हमारे पास एक परिचयात्मक कविता है। और इसलिए, अध्याय 1, श्लोक 4 से 11 में, जीवन की चक्रीय प्रकृति के बारे में एक कविता है। और इसलिए, यह बहुत अवलोकनात्मक है, और यह ईश्वर की रचनात्मक व्यवस्था से बहुत जुड़ा हुआ है।

और इसलिए हम पाते हैं कि ईश्वर जीवन में चक्र बनाता है, और हम पाते हैं कि पृथ्वी के घूर्णन में, हम इसे विभिन्न मौसमों आदि में पाते हैं, लेकिन हम पाते हैं कि चक्रीय प्रकृति किसी भी प्रकार का कोई अंत प्रदान नहीं करती है। और यह वह अंतिम खेल है, यह जीवन के अनुभव का वह संकल्प है जो आमतौर पर पतित दुनिया में हम सभी के पास होता है, जिसे कोहेलेट तलाशता हुआ प्रतीत होता है, जिसे वह खोजना चाहता है। और वह पुस्तक के आरंभ से ही पाता है कि जीवन की चक्रीय प्रकृति हमें सृष्टि से बताती है कि हम वास्तव में जीवन की गिरी हुई स्थिति की दुविधा का समाधान नहीं ढूँढ पाएंगे।

दूसरे शब्दों में, जब उत्पत्ति अध्याय 3 में भगवान ने पतन में दुनिया को शाप दिया, तो हम एक तरह से एक दिनचर्या में फंस गए थे। और हम उस दिनचर्या से तब तक बाहर नहीं निकलेंगे जब तक कि नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के निर्माण में रहस्योद्घाटन, मुक्ति नहीं हो जाती। और मैं निश्चित रूप से ऐसा कहकर कोहेलेट वास्तव में हमें जो बताता है, उससे आगे बढ़ रहा हूँ, लेकिन ऐसा लगता है कि प्रकृति के चक्रों और जीवन के चक्रों का वर्तमान अनुभव कुछ भारीपन की भावना का संकेत देता है जिसे हम स्वाभाविक रूप से यिन्न के संकल्प के बिना अनुभव करते हैं, हेवेल की दुविधा का समाधान।

पीढ़ियाँ आती हैं और पीढ़ियाँ चली जाती हैं, परन्तु पृथ्वी सदैव बनी रहती है। सूरज उगता है और सूरज डूब जाता है और जल्दी से वापस वहीं चला जाता है जहाँ से उगता है। हवा दक्षिण की ओर चलती है और उत्तर की ओर मुड़ जाती है।

यह गोल-गोल घूमती रहती है और अपने रास्ते पर लौट आती है। और इसलिए वह चक्रीय भाव इस कविता में व्याप्त है। सभी नदियाँ समुद्र में गिरती हैं, फिर भी समुद्र कभी नहीं भरता।

धाराएँ जहाँ से आती हैं, वहीं फिर लौट जाती हैं। मेरा सुझाव है कि वह शायद यहाँ सिर्फ प्रकृति की ओर ही इशारा नहीं कर रहे हैं, बल्कि यहाँ प्रकृति लगभग उसी का प्रतिनिधि है जिसे हम धूल से धूल तक नश्वर स्थिति में पाते हैं। नया जन्म तो आता है, लेकिन वह जन्म भी कब्र की ओर जा रहा होता है।

और फिर एक और पीढ़ी आती है, केवल अगली पीढ़ी के पास जाने के लिए। लेकिन एक पीढ़ी नहीं जानती कि अगली पीढ़ी किसमें शामिल होने वाली है। और इसलिए यह बुद्धिमान व्यक्ति को निराश करता है क्योंकि ऐसी कोई स्थायी विरासत नहीं है जिसे कोई व्यक्ति अपने नश्वर वर्षों से आगे बढ़ा सके।

एक बुद्धिमान व्यक्ति के लिए सभी चीजें थकाऊ, थकाऊ हैं, जो यह जानता है, कोई भी इससे अधिक नहीं कह सकता। न तो आँख कभी देखने से भरती है, न कान कभी सुनने से भरते हैं।

और इसलिए व्यक्तिगत स्तर पर भी, और हम इनमें से कुछ को बाद में अध्याय 4 और 5 में ज्ञान के लेंस के माध्यम से लागू होते देखेंगे, विशेष रूप से कोहेलेट को एहसास होता है कि एक आदमी महान धन और खजाने की तलाश करता है और इकट्ठा करता है, और वह ऐसा नहीं करता है। यहाँ तक कि पर्याप्त भी नहीं है।

भले ही वह हमारी आधुनिक शब्दावली में लाखों और अरबों कमा सकता है, फिर भी वह अपने हाथों के काम से कभी संतुष्ट नहीं हो सकता है। और एक अरबपति को भी कब्र में जाना होगा। और इसलिए केवल खजाने के लिए खजाना इकट्ठा करना, कोहेलेट को बाद में शुद्ध मूर्खता माना जाएगा।

जो हुआ है वह फिर से जीवन की चक्रीय प्रकृति और यहां तक कि इतिहास की ओर इशारा करेगा। सिर्फ प्रकृति ही नहीं, इतिहास भी खुद को दोहराता है। जो किया गया है वह फिर से किया जाएगा।

कुछ नया नहीं है नये दिन में। और इसलिए, यह अंडर द सन वाक्यांशविज्ञान जिसका हम पूरी किताब में बार-बार सामना करेंगे, अंडर द सन वास्तव में केवल परिप्रेक्ष्य का मामला है। यह आवश्यक नहीं है कि जीवन किसी पिछड़ी हुई स्थिति में गिरे हुए परिप्रेक्ष्य से जीया जाए, बल्कि यह एक नश्वर या क्षैतिज दृष्टिकोण से जीया जाए।

बुद्धिमान व्यक्ति केवल उतना ही देखने में सक्षम होता है जितना वह सूर्य के नीचे जीवन को देखता है और इसे एक नश्वर प्राणी के रूप में अनुभव करता है। क्या ऐसी कोई चीज़ है जिसके बारे में कोई कह सके, देखो, यह कोई नई चीज़ है? अब फिर, हम सावधान रहना चाहते हैं कि इसे जीवन के हर पहलू में न पढ़ा जाए।

जिस वीडियो कैमरे के बारे में मैं अभी बात कर रहा हूँ वह कोहेलेट के समय में मौजूद नहीं था। कुछ अर्थों में, यह कुछ नया है। एक आईफोन, एक आईपैड, सेल फोन और आधुनिक चीज़ें जो हम अनुभव करते हैं, कुछ अर्थों में नई चीज़ें हैं।

लेकिन कोहेलेट केवल यह कह रहे हैं कि जीवन ऐतिहासिक और स्वाभाविक रूप से खुद को दोहराता है, और ऐसा कुछ भी नहीं है जो उस नश्वर पतित स्थिति से किसी प्रकार का परिवर्तन लाता हो जिसके साथ पृथ्वी को उत्पत्ति अध्याय 3 में शापित किया गया था। कोई स्मरण नहीं है पुराने समय के पुरुषों का। यह, वैसे, एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में एक लघु रूपांकन बन जाता है, यह विचार कि कोई स्थायी विरासत नहीं है, यहां तक कि बुद्धिमानों और अमीरों से भी। और यहां तक कि जो अभी आने वाले हैं उन्हें भी अनुसरण करने वालों द्वारा याद नहीं किया जाएगा, और इसलिए कोई स्थायी विरासत की यह चीज़ आगे और आगे दोहराई जाती है।

यहां प्रारंभिक कविता के बाद जो चक्रीय नो- यिट्रोन स्थिति को स्थापित करती है जिसे हम इस दुनिया में पाते हैं, कोहेलेट पहले व्यक्ति में बोलते हैं, और वह इस यात्रा को शुरू करने में सक्षम होने के लिए अपनी योग्यता के बारे में स्पष्ट रूप से बताते हैं कि क्या कोई समाधान है, हेबेल स्थिति के लिए कोई भी यिट्रोन। मैं, कोहेलेट, यरूशलेम में इस्राएल पर राजा था। मैंने स्वर्ग के

नीचे जो कुछ भी किया जाता है, उसका बुद्धि से अध्ययन और अन्वेषण करने के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया।

वैसे, यहां सूरज के नीचे का बदलाव एक साहित्यिक बदलाव से ज्यादा कुछ नहीं है। मुझे नहीं लगता कि यह यहाँ सूर्य के नीचे के परिप्रेक्ष्य से भिन्न परिप्रेक्ष्य है। ध्यान दें कि कोहेलेट ज्ञान के लेंस के माध्यम से इस मुद्दे की खोज और अन्वेषण करने जा रहा है, और हम पाएंगे कि यह पुष्टि शास्त्र के अगले खंड में, छंदों के अगले खंड में कई बार दोहराई गई है।

हम यहां यह भी पाते हैं कि यिट्रोन को खोजने की उसकी यात्रा कुछ ऐसी है जो उसके लिए एक जुनून बन जाती है। वह अपने आप को समर्पित कर देता है। वह विशिष्ट रूप से योग्य है, और वह बहुत उद्देश्यपूर्ण है।

वह यहां जो करना चाह रहा है, उसमें वह बहुत जानबूझकर काम कर रहा है। परमेश्वर ने मनुष्यों पर कितना भारी बोझ डाल दिया है। हमने पिछले व्याख्यान में उस शब्द बोझ का पता लगाया था।

यह हिब्रू शब्द इनयोन है , और इनयोन एक्लेसिएस्टेस की पूरी किताब में कई बार पाया जाता है। वास्तव में, हम पाते हैं कि इनयोन का यह विचार , काफी हद तक हेबेल की तरह, काफी हद तक यिट्रोन की तरह , काफी हद तक अमल, काम या श्रम की तरह, को उस अनूठे तरीके से समझने की जरूरत है जैसा कि कोहेलेट यहां इसका उपयोग करते दिख रहे हैं। यह सिर्फ किसी की पीठ पर बोझ नहीं है, जैसे कि किसी क्षेत्र में श्रम करना पड़ सकता है, बल्कि यह एक प्रकार की भावना है जिसमें मनुष्य खोजने के लिए बाध्य है, या शायद खोजने और खोजने और अन्वेषण करने में सक्षम है, और फिर भी अंततः असमर्थ है, ज्ञान के कार्यान्वयन के माध्यम से, वास्तव में समाधान तक पहुंचना।

और फिर, यह सब मुद्दे पर केंद्रित है, जीवन के भारीपन की समस्या पर। मनुष्य नश्वर है, और फिर भी वह पहचानता है कि उससे परे भी कुछ है, लेकिन वह उसे समझने में सक्षम नहीं है। वह इसे हल करने और इसमें महारत हासिल करने में सक्षम नहीं है।

और इसलिए, बुद्धिमान व्यक्ति के लिए, वास्तव में पंक्ति के अंत तक पहुंचने में असमर्थता, यह एक हताशा है। यह मनुष्य पर भारी बोझ बन जाता है। मैंने वे सभी चीज़ें देखी हैं जो सूर्य के नीचे की जाती हैं।

वे सभी अर्थहीन हैं, या हेबेल, हवा का पीछा कर रहे हैं। अब हेबेल का साथी वाक्यांश जो हमें अक्सर मिलता है, विशेष रूप से एक्लेसिएस्टेस के अध्याय एक से चार में, रेट रुआच, हवा का पीछा करने या उसे पकड़ने का विचार है। अब हेबेल, जैसा कि हमने पिछले व्याख्यान में बताया था, का शाब्दिक अर्थ धुंध या वाष्प है।

यह कुछ ऐसा है जो क्षणभंगुर है। यह कुछ ऐसा है जो क्षणभंगुर है। जिस अनूठे तरीके से कोहेलेट इस शब्द का उपयोग करता है, यह कुछ ऐसा भी बन जाता है जो कभी-कभी निरर्थक या व्यर्थ

होता है, और इस प्रकार केजेवी का अनुवाद, वैनिटी ऑफ वैनिटीज, और आप अक्सर हेबेल शब्द को पुस्तक में 38 बार पाएंगे, जिसका अनुवाद व्यर्थ या व्यर्थ है। कुछ अनुवादों द्वारा घमंड।

और इसलिए, जब आप कोई ऐसी चीज देखते हैं जिसे हवा के बाद पकड़ के रूप में वर्णित किया जाता है, तो आपको वास्तव में वहां व्यर्थता का एहसास होता है, क्योंकि वास्तव में हवा को पकड़ना और उसे वापस खींचना असंभव है। आप इसे बाहर या अपने हाथों में नहीं ले सकते। आप हवा पर काबू नहीं पा सकते।

और कोहेलेट मानते हैं कि जीवन की हेबेल-नेस और जीवन के रहस्यों को समझा नहीं जा सकता। कुछ अर्थों में, यह विडंबनापूर्ण है कि ज्ञान के कार्यान्वयन के माध्यम से, हेबेल की दुविधा को हल करने में अंततः ज्ञान हेबेल है। और इस अर्थ में, ये सारी उपलब्धियाँ और सारी बुद्धिमत्ता जिसे मनुष्य मेज पर ला सकता है, इनमें से कोई भी समस्या, हेबेल-नेस की समस्या को हल करने में सक्षम नहीं थी।

जो टेढ़ा है उसे सीधा नहीं किया जा सकता। जो कमी है उसकी गिनती नहीं की जा सकती। अब यह केवल एक कहावत है, लेकिन यह एक ऐसी कहावत है जो उस दुविधा का वर्णन करती है जिससे कोहेलेट यहां जूझ रही है।

दूसरे शब्दों में, ईश्वर ने जिसे टेढ़ा बना दिया है उसे मनुष्य सीधा करने में असमर्थ है। मनुष्य उस चीज़ में कुछ जोड़ने में असमर्थ है जिसे ईश्वर ने चाहा है या कमी बताया है। दूसरे शब्दों में, मनुष्य की बुद्धि अंततः परमेश्वर की इच्छा को हल करने या उससे आगे बढ़ने में असमर्थ है।

मैं ने मन में सोचा, देखो, जो मुझ से पहिले यरूशलेम पर राज्य करते थे, उन से मैं अधिक बुद्धिमान हो गया हूँ। हमने पहले के एक व्याख्यान में देखा था कि सोलोमन के लिए यह कुछ हद तक अजीब बयान प्रतीत होता है। फिर, यह यहां सोलोमोनिक पहचान को खारिज नहीं करता है, बल्कि यह दिलचस्प है कि सोलोमन से पहले केवल एक राजा ने यरूशलेम पर शासन किया था, और वह डेविड था।

और इसलिए इस तरह का बयान अजीब लगता है, हालाँकि सुलैमान, बहुत स्पष्ट रूप से, यहाँ केवल अतिशयोक्तिपूर्ण भाषा का उपयोग कर रहा था और केवल इस तथ्य पर जोर देने के लिए अतिशयोक्तिपूर्ण भाषा का उपयोग कर रहा था कि वह जितना संभव हो उतना बुद्धिमान था या उतना बुद्धिमान था जितना कोई भी आदमी कभी हुआ हो। , और वह इस खोज या इस यात्रा को करने के लिए विशिष्ट रूप से योग्य था। मैंने बहुत सारी बुद्धिमत्ता और ज्ञान का अनुभव किया है, और निश्चित रूप से, हम इसे 1 राजा 3-11 में सुलैमान की कहानियों में देखते हैं। फिर मैंने खुद को ज्ञान की समझ के साथ-साथ पागलपन और मूर्खता पर भी लागू किया।

अब यह कुछ हद तक कठिन है, है ना? क्योंकि हम देखते हैं कि कोहेलेट इस तथ्य की पुष्टि करता है कि उसने जो खोज की है वह बुद्धिमान आँखों से की जा रही है। यह ज्ञान के लेंस के माध्यम से है कि वह इन चीजों की खोज करता है जिन्हें हेबेल के रूप में वर्णित किया गया है, और

वह हेवेलनेस की समस्या का समाधान ढूंढना चाहता है। लेकिन ऐसा करने की प्रक्रिया में वह कोई कसर भी नहीं छोड़ना चाहेंगे।

वह यह भी पता लगाने जा रहा है कि क्या मूर्खता और पागलपन, मूर्खता के समानांतर हैं या नहीं, यह वास्तव में यहां ज्ञान के बिल्कुल विपरीत है। यदि बुद्धि स्वर्ग की दुविधा का समाधान देने में सक्षम नहीं है, तो शायद विपरीत समाधान प्रदान करेगा। शायद मूर्खता और पागलपन कुछ ऐसा प्रदान करते हैं जिसे मनुष्य मेज पर लाने में सक्षम हो सकता है।

और आखिरकार सवाल यह उठता है कि पतित दुनिया में, क्या मूर्खता और पागलपन का पीछा करना बेहतर बात है? कोहेलेट अंततः ना कहने जा रहे हैं। वह कहने जा रहा है कि जो मनुष्य मूर्खता में चलता है वह उस मनुष्य के समान है जो अंधकार में चलता है। वह चीजों पर लड़खड़ाता है।

वह हासिल करने में सक्षम नहीं है और वह अपना विस्तार करने में सक्षम नहीं है... दूसरे शब्दों में, आप पाएंगे कि एक्लेसिएस्टेस की पूरी किताब में मूर्खता को सकारात्मक अर्थ में स्वीकार नहीं किया गया है। लेकिन हमारा कोहेलेट यहां अध्याय एक और दो के आत्मकथात्मक खंडों में कहता है, अरे, मैंने इसकी पूरी जांच कर ली है। ऐसा कहने के लिए, मैंने हर चट्टान के नीचे देखा है।

और मैंने पाया है कि इनमें से कोई भी जीवन की गिरी हुई स्थिति की दुविधा का कुछ समाधान प्रदान करने में सक्षम नहीं है। इसलिए, वह स्वयं को ज्ञान के साथ-साथ पागलपन और मूर्खता को समझने में भी लगाता है। वैसे, यह ज्ञान के माध्यम से ही है कि वह देखता है और अनुभव करता है और यहां तक कि पागलपन और मूर्खता से खिलवाड़ भी करता है।

तो फिर, वह ज्ञान के चश्मे से देख रहा है, जबकि वह ज्ञान के माध्यम से पागलपन और मूर्खता की खोज कर रहा है। लेकिन मुझे पता चला कि यह भी हवा का पीछा करना है। यह कुछ ऐसा है जिसे समझा नहीं जा सकता।

क्योंकि अधिक बुद्धि के साथ बहुत दुःख आता है। जितना अधिक ज्ञान, उतना अधिक दुःख। और इसका मतलब यह नहीं है कि बुद्धि खराब है या बुद्धि आपको आवश्यक रूप से एक महान निराशावादी बना देगी।

लेकिन वह बस इतना कह रहा है कि वह जितना अधिक समझदार होता जाता है, उतना ही अधिक उसे यह एहसास होता है कि इसे समझा नहीं जा सकता। इसका समाधान नहीं किया जा सकता। यह एक तरह से ऐसा है जैसे आप विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों को सुनेंगे।

वे जितना अधिक आप जानते हैं उसके बारे में बात करेंगे, उतना ही अधिक आपको एहसास होगा कि आप नहीं जानते हैं। और इसलिए हम कभी-कभी कॉलेज के छात्रों के बीच नए छात्रों के आने और ऐसा व्यवहार करने के बारे में बात करेंगे जैसे कि वे सब कुछ जानते हों। और जब वे स्नातक होते हैं, तब तक उन्हें एहसास होता है कि उन्हें अभी भी कितनी दूर तक जाना है।

और इसलिए, ज्ञान इकट्ठा करते समय, बुद्धिमान व्यक्ति कहता है, मैंने वास्तव में अपनी बुद्धि के माध्यम से पता लगाया है कि मैं वास्तव में ब्रह्मांड के बारे में और चीजों के काम करने के तरीके के बारे में कितना कम समझता हूँ। और मुझे एहसास हुआ कि आखिरकार ये चीज़ें कितनी अनजानी हैं। और इसलिए इससे उसे अतिरिक्त दुःख और झुंझलाहट होती है।

हम उस प्रकार का एक रूपांकन बाद में पुस्तक में भी देखेंगे। यहाँ आत्मकथात्मक चिन्तन क्रम को आगे बढ़ाते हुए मैंने मन ही मन सोचा, चलो, अब मैं तुम्हें मजे से परखूँगा कि क्या अच्छा है। फिर, बुद्धि के द्वारा वह सुख को परखता है, वह पागलपन को परखता है, वह मूर्खता को परखता है।

भारी साबित हुआ . दूसरे शब्दों में कहें तो आनंद, पागलपन, मूर्खता, ये सारी चीज़ें भी वर्तमान अनुभव से परे कुछ भी प्रदान करने में सक्षम नहीं थीं। मैंने कहा, हँसी मूर्खतापूर्ण है।

वास्तव में, बाद में, जब वह ज्ञान के माध्यम से विभिन्न लौकिक कथनों की खोज करता है कि किसी को पतित दुनिया में कैसे लाभ मिल सकता है, तो उसे पता चलता है कि हँसी और मूर्खता का पीछा करना, अंततः कांटों की चटकने जैसी है। यह सिर्फ शोर है, यह सिर्फ शोर से परे कुछ भी नहीं है। और आनंद क्या हासिल करता है? मैंने शराब पीकर खुद को खुश करने की कोशिश की और मूर्खता को गले लगाया, मेरा दिमाग अभी भी ज्ञान के साथ मेरा मार्गदर्शन कर रहा था।

फिर से, कोहेलेट यह पता लगाने के लिए सभी संभव चीज़ों का अनुभव कर रहा है कि इस यात्रा में समाधान प्रदान करने के लिए कुछ भी है या नहीं। मैं देखना चाहता था कि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों के लिए क्या करना उचित है। फिर, सूर्य के नीचे वाक्यांशविज्ञान का एक और रूपांतर।

ऐसा यहाँ नहीं है जैसे कि वह स्वर्ग से नीचे देख रहा है, ऐसा नहीं है कि वह इस वाक्यांश में ईश्वरत्व या पवित्रता के माध्यम से कुछ खोज रहा है, जबकि अन्यत्र वह पिछड़े हुए सांसारिक दृष्टिकोण से कुछ कर रहा है। वह बस इतना ही कह रहा है कि मैं यहाँ, सूर्य के नीचे या स्वर्ग के नीचे, मूल रूप से पर्यायवाची, उनके जीवन के कुछ दिनों के दौरान सभी चीज़ों की जाँच कर रहा हूँ। और इसलिए, यहां एक विशाल अस्तित्व, एक नश्वर अस्तित्व की क्षणभंगुर प्रकृति, उनके जीवन के कुछ दिनों पर प्रकाश डाला जा रहा है।

मैंने महान परियोजनाएं शुरू कीं। मैंने अपने लिये घर बनाये और अंगूर के बाग लगाये। मैंने बगीचे और पार्क बनाये और उनमें सभी प्रकार के फलों के पेड़ लगाए।

हम प्राचीन काल से जानते हैं कि प्राचीन विश्व के राजाओं और कुलीनों को पार्कों और बगीचों और ऐसी चीज़ों के निर्माण से बहुत खुशी मिलती थी। इसने एक तरह से उनकी भव्यता, राजाओं के रूप में उनकी महानता को प्रदर्शित किया। मैंने पानी के जलाशय बनाए, जिनमें फलते-फूलते पेड़ उगाए गए, और इस तरह कोहेलेट शहरों को सिंचित करने के लिए जलमार्गों में महारत हासिल करने में सक्षम हो गए।

मैंने नर और मादा दास खरीदे और मेरे पास अन्य दास भी थे जो मेरे घर में पैदा हुए थे, इसलिए वह एक धनी व्यक्ति था। यह मुझे अय्यूब के बारे में सोचने पर मजबूर करता है। अय्यूब की पुस्तक की प्रस्तावना में, अय्यूब को पूर्व के सभी व्यक्तियों में सबसे महान बताया गया है।

और फिर यह उसकी भेड़-बकरियों और उसके झुण्डों का वर्णन करता है। प्राचीन दुनिया में, इस प्रकार की चीजों का संग्रह मनुष्य की महानता को प्रदर्शित करता था। मेरे पास यरूशलेम में मुझसे पहले किसी भी अन्य की तुलना में अधिक गाय-बैल और भेड़-बकरियाँ थीं।

मैंने अपने लिये और राजाओं तथा प्रान्तों के लिये चाँदी और सोना इकट्ठा किया। मुझे पुरुष और महिला गायक और एक हरम भी मिला। अब यह दिलचस्प है, बहुत से लोग यहां हरम शब्द पढ़ेंगे, और निश्चित रूप से, हम सुलैमान के बारे में सोचते हैं, हम 700 पत्नियों और 300 रखैलों के बारे में सोचते हैं, और हम कहते हैं, हाँ, अगर यह सुलैमान है तो हरम का कोई मतलब नहीं है।

यह वास्तव में काफी दिलचस्प है। यह शब्द हरम वास्तव में एक ऐसा शब्द है जो हिब्रू बाइबिल में केवल एक बार पाया जाता है। और जब आप इसके बारे में सोचते हैं, यदि आपके पास हिब्रू बाइबिल में केवल एक बार एक शब्द पाया जाता है, और शब्दकोशों और शब्दकोशों को याद करते हैं, तो वे स्वर्ग से प्रेरित होकर नहीं आते हैं, और इसलिए विद्वान इस शब्द के साथ वास्तव में संघर्ष करने की कोशिश करते हैं कि यह शब्द क्या हो सकता है हरम शब्द के पीछे का अर्थ है, और आप देखेंगे कि अनुवाद अलग-अलग दिशाओं में जाते हैं।

कुछ अनुवाद वास्तव में इस खजाने के बक्से का अनुवाद करते हैं, या दूसरे शब्दों में, किसी प्रकार के धन का संचय करते हैं। और इसलिए, इसका मतलब यह नहीं है कि कोहेलेट के पास ये सभी महिलाएं थीं, और वह आनंद के लिए किसी प्रकार की सुखवादी खोज कर रहा है। मेरा मतलब है कि कुछ अर्थ है जिसमें यहां पाठ इन सभी चीजों के संग्रह का वर्णन कर रहा है, और वह निश्चित रूप से यह देखने के लिए खुशी और मूर्खता और पागलपन की तलाश में था कि क्या इनमें से कोई भी किसी प्रकार का स्थायी मूल्य लाता है।

लेकिन मैं यहां हरम की इस अवधारणा के बारे में बहुत अधिक नहीं पढ़ूंगा। लेकिन यह शायद हरम की बात कर रहा है। निश्चित रूप से, पूर्व के महानतम लोगों, या प्राचीन दुनिया के राजाओं ने हरम इकट्ठा किया होगा, और इसलिए यह उसके अनुरूप नहीं होगा।

मनुष्यों के हृदय की प्रसन्नता, खजाना, धन, साथ ही हरम, का वर्णन इस तरह किया जा सकता है। मैं यरूशलेम में अपने से पहले के किसी भी व्यक्ति से कहीं अधिक महान बन गया। इस सब में मेरी बुद्धि मेरे साथ रही।

और इसलिए, यहां यह कुछ हद तक दिलचस्प है, कोहेलेट कह रहे हैं, मैंने यह सब हासिल कर लिया है, और मैं यह पता लगाने के लिए विशिष्ट रूप से योग्य हूँ कि क्या ऐसा कुछ है जो महान से परे किसी प्रकार की स्थायी विरासत प्रदान करने में सक्षम हो सकता है। कुछ भी जो जीवन के पतन या भारीपन की समस्या का कुछ समाधान प्रदान करने में सक्षम हो सकता है। मैं यह सब ज्ञान के द्वारा खोज रहा हूँ क्योंकि मैं उन महान चीजों के संग्रह के माध्यम से खुद की जांच और अनुभव करता हूँ जिन्हें मैं अपने जीवन में हासिल करने और प्राप्त करने में सक्षम हूँ।

और इसलिए फिर, कोहेलेट ज्ञान के साथ-साथ धन में भी विशिष्ट रूप से योग्य है। मैंने अपने आप को उस चीज़ से वंचित कर दिया जो मेरी आँखें चाहती थीं। मैंने अपने दिल से इनकार कर दिया कोई खुशी नहीं।

फिर, वह कोई कसर नहीं छोड़ता। मेरा मन मेरे सब कामों से प्रसन्न हुआ, और यह मेरे परिश्रम का प्रतिफल था। फिर भी जब मैंने उन सबका सर्वेक्षण किया जो मेरे हाथों ने किया था, और जो कुछ हासिल करने के लिए मैंने कड़ी मेहनत की थी, सब कुछ अस्त-व्यस्त था, हवा का पीछा करना।

सूर्य के नीचे कोई यिट्रोन नहीं मिला। और इसलिए वास्तव में यहां अध्याय 2 और श्लोक 11 अध्याय 1 और श्लोक 3 के साथ ब्रैकेट या काम करते प्रतीत होते हैं। अध्याय 1 और श्लोक 3 में, कोहेलेट पूछते हैं, सूर्य के नीचे कौन सा यिट्रोन पाया जाता है? और इन सभी चीज़ों को इकट्ठा करने और ज्ञान, पागलपन और मूर्खता, खुशी, और महान धन के संचय के माध्यम से खोज करने के बाद, कोहेलेट को पता चला कि इसमें कोई यिट्रोन नहीं मिला है। तो, फिर वह आगे बढ़ता है।

मैं अपने विचारों को बुद्धिमत्ता, साथ ही पागलपन और मूर्खता पर विचार करने के लिए मोड़ता हूं, फिर से अध्याय 1 और श्लोक 7 के समानांतर। राजा का उत्तराधिकारी इससे अधिक क्या कर सकता है जो पहले ही किया जा चुका है? यह आपको जीवन की चक्रीय प्रकृति पर कविता, अध्याय 1 और श्लोक 9 को याद करने पर मजबूर करता है। मैंने देखा कि बुद्धि मूर्खता से बेहतर है, जैसे प्रकाश अंधेरे से बेहतर है। अब उसने यह खोजना चाहा कि जीवन में क्या सार्थक है। हम बाद में यह पता लगाने जा रहे हैं कि कोहेलेट न केवल यिट्रोन की तलाश कर रहा है, अंततः यिट्रॉन एक्लेसिएस्टेस की किताब में नहीं मिलेगा, बल्कि वह यह खोजना चाहता है कि क्या है, क्या बेहतर है।

और यहाँ हमें एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में एक प्रकार के धर्मशास्त्र से भी बेहतर, ज्ञान धर्मशास्त्र की पहली झलक मिलती है। वह पाता है कि बुद्धिमत्ता मूर्खता से बेहतर है क्योंकि वह दोनों के गुणों का पता लगाता है। उन्होंने पाया कि बुद्धि मूर्खता से बेहतर है, जैसे प्रकाश अंधेरे से बेहतर है।

बुद्धिमान व्यक्ति के सिर में आँखें होती हैं जबकि मूर्ख अंधकार में चलता है। लेकिन मुझे एहसास हुआ कि उन दोनों का भाग्य एक ही है, और वह है मृत्यु। हमने पहले एक व्याख्यान में मृत्यु की अनिवार्यता को एक प्रमुख उद्देश्य के रूप में खोजा था, और यहां हमें मृत्यु की अनिवार्यता की एक झलक मिलती है जो पूरी किताब में बार-बार दोहराई जाती है।

दूसरे शब्दों में, बुद्धि यहीं और अभी में बेहतर है, लेकिन समस्या यह है कि बुद्धि अभी भी कोई स्थायी यिट्रोन प्रदान नहीं करती है। दूसरे शब्दों में, सभी चीज़ों को समतल करने वाले महान व्यक्ति, तुल्यकारक, मृत्यु द्वारा ज्ञान को एक तरह से समतल किया जाने वाला है। और इस प्रकार मूर्ख और बुद्धिमान दोनों को भी मरना होगा।

फिर मैंने मन ही मन सोचा, और जिस तरह से हम इन्हें साहित्यिक अर्थ में प्रतिबिंब भाषण कहते हैं, उस मूर्ख का भाग्य मुझसे भी आगे निकल जाएगा। तो फिर बुद्धिमान होने से मुझे क्या हासिल होगा? ज्ञान में पाया जाने वाला कोई पिट्रोन नहीं है। मैंने मन में कहा, यह भी तो हेवेल है।

और वैसे, हेवेल विचार कई बार निर्णय की आभा ले लेता है, और ऐसा लगता है जैसे कोहेलेट कहता है कि मैं हेवेलनेस का निरीक्षण करता हूँ और मैं इसे हेवेल के रूप में घोषित करता हूँ। दूसरे शब्दों में, यह नकारात्मक अर्थ है जो पतित दुनिया में रहने वाले जीवन के खिलाफ कई अभियोगों के साथ आता है। उन्हें हेवेल घोषित किया गया है।

क्योंकि बुद्धिमान मनुष्य मूर्ख के समान अधिक समय तक स्मरण न किया जाएगा। हमें श्लोक 11 के अध्याय 1 के बारे में सोचने पर मजबूर करता है, जहां हालांकि पुराने लोगों की कोई याद नहीं है, लेकिन उनका अनुसरण करने वालों द्वारा उन्हें याद नहीं किया जाएगा। और इसलिए, वह खुद को दोहराता है।

पुनरावृत्ति की वह चक्रीय प्रकृति जो हम एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में पाते हैं, पुस्तक की विशेषता है। क्योंकि बुद्धिमान मनुष्य मूर्ख के समान अधिक समय तक स्मरण न किया जाएगा। आने वाले दिनों में दोनों को भुला दिया जाएगा।

मूर्ख की तरह बुद्धिमान व्यक्ति को भी मरना होगा। मृत्यु की अनिवार्यता। और इसलिए कोहेलेट इन चीजों को देखने और अनुभव करने और उन पर विचार करने के बाद घोषणा करते हैं, कहते हैं, इसलिए मुझे जीवन से नफरत थी।

अब स्वाभाविक रूप से जब कोई इसे पढ़ता है, तो वे सोचते हैं, ठीक है, यह वास्तव में निराशावादी है, है ना? लेकिन आपको कोहेलेट के तर्क की पंक्ति को याद रखना होगा, वह बस अपनी झुंझलाहट व्यक्त कर रहा है। वह एक बुद्धिमान ऋषि है जो इन चीजों पर विचार करता है, और यह उसे परेशान करता है। यह उसे निराश करता है।

दुविधा को देखते हुए कोहेलेट में गुस्से की कोई कमी नहीं है, और मुझे लगता है कि दुविधा एक उपयुक्त शब्द है, क्योंकि जीवन पतित दुनिया में रहता था, जहां ज्ञान अक्षम है। यह ऐसी किसी भी चीज़ को समझने में सक्षम नहीं है जो स्थायी समाधान प्रदान करती हो। तो, वह जीवन से नफरत करता है, मैं जीवन से नफरत करता हूँ, शायद यहां थोड़ा अतिशयोक्तिपूर्ण है, लेकिन फिर से तर्क की पंक्ति में, याद रखें कोहेलेट सिर्फ यह नहीं कह रहा है, मैं मौत का सौदागर हूँ, मैं यहां जो कुछ भी देखता हूँ उससे बस निराश हूँ, क्योंकि जो काम सूर्य के नीचे किया जाता है वह मेरे लिये दुःखदायी था।

अंततः यह ऐसा कुछ भी एकत्र करने में असमर्थ रहा जो समाधान प्रदान कर सके। यह सब अव्यवस्थित है, सारा सामान अव्यवस्थित है। इन चीजों की खोज में जो प्रयास बढ़ाया और खर्च किया जाता है, वह हवा का पीछा करना है।

रुआच, फिर से, हवा का पीछा करते हुए। मुझे उन सभी चीज़ों से नफरत है जिनके लिए मैंने सूर्य के नीचे चक्कर लगाया था, क्योंकि मुझे उन्हें अपने बाद आने वाले के लिए छोड़ देना चाहिए। हमने उस विषय को जीवन के चक्रों पर कविता के अंत में देखा।

कोई व्यक्ति जो साथ आता है और बाद में कोहेलेट कहता है, यह व्यक्ति मूर्ख हो सकता है। कौन जानता है कि वह मूर्ख होगा या बुद्धिमान, फिर भी वह उन सभी कार्यों पर नियंत्रण रखेगा जिनमें मैंने अपना प्रयास और वह कौशल डाला है जो सूर्य के नीचे मेरे पास है। ये भी हेबेल है।

दूसरे शब्दों में, मैं श्रम करता हूँ और परिश्रम करता हूँ, मैं प्रयास करता हूँ, और इस प्रयास में कोई रुकावट नहीं है, और फिर भी मैं इसमें से कुछ भी अपने साथ नहीं ले जा सकता हूँ और मैं इसे किसी ऐसे व्यक्ति के लिए छोड़ सकता हूँ जो मूर्ख है, जो इसे बर्बाद करता है और मूर्खता करता है। अतः मेरा हृदय निराश होने लगा, यही कारण है कि वह सूर्य के नीचे मेरे सारे परिश्रम से अधिक जीवन से घृणा करता है। क्योंकि मनुष्य अपना काम बुद्धि, ज्ञान, और कौशल से कर सकता है, और फिर उसे सब कुछ एक पर छोड़ देना चाहिए, उसका सब कुछ किसी ऐसे व्यक्ति पर छोड़ देना चाहिए जिसने इसके लिए काम नहीं किया है।

यह भी बड़ा भारी और दुर्भाग्य है। और इसलिए, कोई भी श्रम और कोई उपलब्धि कब्र से आगे नहीं बढ़ती है, और यह वास्तव में आपके आने और जाने के बाद बर्बाद हो सकती है। मनुष्य को उस सारे परिश्रम और उत्सुकतापूर्ण प्रयत्न के लिए क्या मिलता है जिसके लिए वह सूर्य के नीचे परिश्रम करता है? उसके सारे दिन, उसका काम, उसका अमल, दर्द और शोक है।

यहां तक कि रात में भी उसका दिमाग आराम नहीं करता है, इसलिए तनाव रात में भी नींद में बना रहता है। ये भी हेबेल है। और इसलिए, श्रम के परिश्रम के प्रकाश में, कोहेलेट कुछ ऐसा खोजने का संकल्प करता है जो अच्छा हो, कुछ ऐसा जो बेहतर हो।

और यहां श्लोक 24 में, हम अपने जीवन का आनंद लेने के पहले उपाय की शुरुआत करते हैं। हमारे बुद्धिमान व्यक्ति का मानना है कि एक आदमी खाने-पीने और अपने काम में संतुष्टि पाने से बेहतर कुछ नहीं कर सकता। यह भी मैं देखता हूँ कि यह परमेश्वर के हाथ से है।

क्योंकि उसके बिना कौन खा सकता, या आनन्द पा सकता? और हम एन्जॉय लाइफ के दौरान यह देखने जा रहे हैं कि कोहेलेट मानते हैं कि अच्छी चीज़ें भगवान के हाथ से आती हैं। मैं इन्हें अनुग्रह के रूप में वर्णित करूंगा, वह ज्ञान जिसे एक बुद्धिमान व्यक्ति पहचानने में सक्षम है और यहां तक कि यह समझने में भी सक्षम है कि यह सभी चिंतित प्रयास और यह सारा परिश्रम और श्रम, जो अंततः कुछ भी उत्पादन करने में असमर्थ है, यह पीछा नहीं होना चाहिए मनुष्य का, बल्कि सामान्य या नियमित उपहारों का स्वागत जो ईश्वर पतित दुनिया में प्रदान करता है। तो, मैं देखता हूँ कि यह भी भगवान के हाथ से है।

जो मनुष्य उसे प्रसन्न करता है, उसे भगवान बुद्धि, ज्ञान और खुशी देता है, लेकिन पापी को, वह धन इकट्ठा करने और जमा करने का काम देता है ताकि उसे भगवान को प्रसन्न करने वाले को सौंप दे। यह भी हवा का पीछा करने वाला हेबेल है, है ना? रुआच. इसलिए, श्रम का ऐसा कोई

उत्पाद नहीं है जो कब्र से आगे तक फैला हो, लेकिन यहां और अभी में, मनुष्य के पास फिर भी उस आनंद को प्राप्त करने की क्षमता है जो भगवान उसे उपहार के रूप में प्रदान करता है।

तो इस सारे गुस्से, मेहनत और शोक के बीच भी, कोहेलेट को कुछ ऐसा मिला जो फिर भी बेहतर है, कुछ अच्छा है। और हम इस तरह की सोच को पूरी किताब में विस्तारित और अधिक विस्तार से देखेंगे। अब अध्याय 3 की शुरुआत एक कविता से होती है, एक बहुत ही रोचक कविता, समय पर एक कविता।

एक्लेसिएस्टेस की पूरी किताब में समय एक छोटा-मोटी भाव बन गया है, हम अध्याय 3 में समय के संबंध में जिन मुद्दों से निपटते हैं उन्हें अध्याय 8 में फिर से दोहराते हुए देखेंगे। अध्याय 3 एक बयान के साथ शुरू होता है जो मेरा मानना है कि एक का सामने वाला अंत है समावेशन, एक ब्रेकेटिंग जो श्लोक 17 में अध्याय 3 के साथ समाप्त होती है। और समय का यह मुद्दा एक बहुत ही लचीली अवधारणा है जो ईश्वर की गतिविधि के साथ-साथ मनुष्य की गतिविधि को भी प्रतिबिंबित करती है क्योंकि मनुष्य गिरे हुए रास्ते से गुजरना चाहता है और कई बार चुनौतीपूर्ण होता है। दुनिया। और इसलिए, अध्याय 3 की शुरुआत में, स्वर्ग के नीचे हर चीज़ के लिए एक समय और हर गतिविधि के लिए एक मौसम है।

और इसके बाद छंद 2 से 8 में कुछ विचित्र व्यवस्था के साथ समानांतर रूप से द्विआधारी युग्मों का एक सेट है। जन्म लेने का समय और मरने का समय, पौधे लगाने का समय और उखाड़ने का समय, मारने का समय और ठीक होने का समय, तोड़ने का समय, और निर्माण करने का समय। समानताओं को खत्म करने का समय और तोड़ने का समय, समानताओं को ठीक करने का समय और निर्माण करने का समय। रोज़े का समय और हंसने का समय, शोक मनाने का समय और नाचने का समय।

तो ऐसा प्रतीत होता है कि श्लोक 4 में समानांतर रेखाओं के बीच कुछ वृद्धि हुई है। रोज़े और शोक मनाने, हँसें और नाचें। पत्थरों को बिखेरने का समय और उन्हें इकट्ठा करने का भी समय है, गले लगाने का भी समय है और टालने का भी समय है।

अब पत्थर बिखेरने और पत्थर इकट्ठा करने का यह मुद्दा व्यंजनापूर्ण हो सकता है, शायद यौन क्रिया के संबंध में एक तरह का मुहावरेदार बयान हो सकता है। यह गले लगाने के समय और परहेज करने के समय के समानांतर प्रतीत होता है। दूसरों का मानना है कि पत्थर बिखेरना और पत्थर इकट्ठा करना प्राचीन दुनिया में युद्ध आदि के संदर्भ में कुछ गतिविधि का संदर्भ है।

एक विजयी सेना अंदर आएगी और पूरे मैदान में पत्थर बिखेर देगी या शायद यह पत्थर बिखेरने और किलेबंदी और उस तरह की चीज़ों को ध्वस्त करने का मामला हो सकता है। निश्चित रूप से समस्या यह है कि गले लगाने और परहेज करने के बीच कोई बहुत समझदार समानता नहीं दिखती है, जब तक कि हम उस तरह के गले लगाने से नहीं निपट रहे हैं जहां कोई संधि हो सकती है या किसी प्रकार की शांति की व्यवस्था हो सकती है। लेकिन यह काफी अस्पष्ट है क्योंकि एक्लेसिएस्टेस में कई चीज़ें हैं।

खोजने का समय और त्यागने का भी समय, रखने का भी समय और फेंक देने का भी समय। और इसलिए फिर से हम खोजने और रखने और फेंक देने और त्यागने, फाड़ने का समय और सुधारने का समय, चुप रहने का समय और बोलने का समय के बीच एक समानांतर व्यवस्था पाते हैं। और इसलिए, चुप्पी और बोलने के समानांतर होने पर, यहां तोड़ने और सुधारने का रिश्तों से कुछ लेना-देना हो सकता है।

प्यार करने का समय और नफरत करने का समय, युद्ध का समय और शांति का समय। और इसलिए हमने समय पर कविता से संबंधित एक पिछले व्याख्यान में देखा था कि समय एक बहुत ही लचीली अवधारणा है। हम समय की अवधि को समय में एक बिंदु के रूप में संदर्भित कर सकते हैं, दूसरे शब्दों में, एक विशेष तिथि, शायद दिन का एक विशेष समय भी, या हम किसी ऐसी चीज़ का उल्लेख कर सकते हैं जो अधिक महत्वपूर्ण है।

दूसरे शब्दों में, समय की एक अवधारणा जैसे कि ऐसा करने या वैसा करने का अच्छा समय। मैंने पहले के एक व्याख्यान में उल्लेख किया था कि यदि किसी स्कीयर के लिए दो या तीन फीट बर्फ पड़ती है तो हम उसे स्की करने का अच्छा समय मान सकते हैं। या यदि आप एक खूबसूरत शाम के बारे में बात कर रहे हैं तो आप कह सकते हैं कि यह खाना पकाने, बाहर खाने या आँगन में ऐसा ही कुछ करने का अच्छा समय है।

और इसलिए, हिब्रू भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा में भी अलग-अलग अर्थ हैं जिनमें समय का उपयोग किया जा सकता है। समय पर पूरी कविता में जिस हिब्रू शब्द का प्रयोग किया गया है वह एट है। और फिर, यह एक बहुत ही लचीला शब्द है जैसा कि अंग्रेजी में हमारा शब्द टाइम है।

और समय पर कविता में मुद्दा यह बन जाता है कि कोहेलेट वास्तव में यहाँ किस समय की बात कर रहे हैं? और जैसा कि हमने उस पहले व्याख्यान में पता लगाया था कि समय की कुछ भावनाएँ हैं जिनमें ईश्वर विषय हो सकता है। ऐसा हो सकता है कि ईश्वर समय निर्धारित करता है, जन्म लेने का समय और मरने का समय निर्धारित करता है, अगर ईश्वर ही है जो किसी की मृत्यु का समय निर्धारित करता है, तो इसका कुछ अर्थ हो सकता है, जो निश्चित रूप से पुस्तक में कहीं और कोहेलेट की सोच की विशेषता प्रतीत होती है। आपके पास ईश्वर द्वारा जीवन के चक्रों की स्थापना का मुद्दा भी है।

इस अर्थ में, समय पर कविता प्रकृति में जीवन के चक्रों पर प्रारंभिक कविता को प्रतिबिंबित करती है जिसे हम अध्याय एक में पाते हैं। आपके पास भगवान भी हैं जो चीजों को उनके समय के अनुसार डिजाइन करते हैं इसलिए समय की उपयुक्तता यहां एक मुद्दा बन जाती है। यह अध्याय तीन और श्लोक ग्यारह द्वारा समर्थित प्रतीत होता है।

उसने हर चीज़ को अपने समय में सुंदर या उपयुक्त बनाया है और निश्चित रूप से, एक बुद्धिमान व्यक्ति को समय के भगवान के डिजाइन और इस स्वर्ग की दुनिया में चीजों को काम करने के तरीके के भगवान के आयोजन में उपयुक्तता को पहचानना सीखना होगा। लेकिन हमारे पास विभिन्न तरीके भी हैं जिनसे मनुष्य को विषय मानकर समय की व्याख्या की जा सकती है। एक बुद्धिमान व्यक्ति को यह जानना आवश्यक है कि समय का कैसे सामना किया जाए और निश्चित

रूप से ज्ञान को बड़े पैमाने पर जीवन की अनिश्चितताओं से निपटने में सक्षम होने के लिए उपदेशों के कार्यान्वयन के रूप में वर्णित किया जा सकता है और समय जीवन की अनिश्चितताओं से निपटने में एक प्रमुख तत्व बन जाता है।

और इसलिए, एक बुद्धिमान व्यक्ति उचित समय को जान लेगा। एक बुद्धिमान व्यक्ति को पता होगा कि ऐसा करने या वैसा करने का उचित समय कब है। वास्तव में, अध्याय दस में एक कहावत में, हम पाते हैं कि कोहेलेट खाने के उचित समय के संदर्भ में एक उचित समय, एक उचित एट का संदर्भ देता है।

और इसलिए वहां हम मनुष्य को विषय मानकर समय की उपयुक्तता पाते हैं। और फिर हम यह भी पाते हैं कि समय एक प्रमुख तत्व बन जाता है। दूसरे शब्दों में, उदाहरण के लिए, जब आप कुछ विषयों के बारे में बात करते हैं तो मैं कॉमेडी के बारे में सोच रहा था।

कॉमेडी अक्सर टाइमिंग का मामला होती है। सही? और इसलिए कभी-कभी यह एक बुद्धिमान व्यक्ति के लिए उचित समय को लागू करने की बात होती है। न केवल चीजों की उपयुक्तता को जानना, बल्कि कब बोलना है और कब बोलने से बचना है या कब गले लगाना है और कब नहीं गले लगाना है, इसका उचित समय अपनी गतिविधि में लागू करने में भी सक्षम होना है।

उस तरह की बातें. और वास्तव में आप जो पाते हैं वह इन द्विआधारी युग्मों और उनकी समानांतर संरचना के साथ समय पर कविता के माध्यम से एक प्रकार की सूची है। आप पाते हैं कि पूरी कविता में समय का वर्णन करने के लिए एक समान अर्थ नहीं है।

दूसरे शब्दों में, आप कह सकते हैं कि कविता ईश्वर के निर्धारित समय के बारे में है। दूसरे शब्दों में, ईश्वर उस समय को निर्धारित करता है जिसमें चीजें होनी चाहिए या होनी चाहिए। और इनमें से कुछ के साथ इसका कोई मतलब नहीं होगा जैसे कि मरने का समय, लेकिन दूसरों के साथ इसका वास्तव में बहुत कम मतलब होता है जैसे कि रोने का समय और हंसने का समय।

ईश्वर आवश्यक रूप से उस समय को निर्धारित नहीं करता है जिसमें कोई व्यक्ति हँसता है या रोता है। और इसलिए वहां आपके पास विषय, उपयुक्तता के रूप में मनुष्य की अधिक समझ है। मनुष्य को पता चल जाएगा कि कब यह करना या वह करना उचित है।

या यह भी हो सकता है कि भगवान ने समय रहते उपयुक्तता तैयार कर ली हो। शायद रोने और हँसने के पीछे यही अर्थ है। भगवान ने रोने और शोक मनाने के लिए उपयुक्त समय और हँसी और उस तरह की गतिविधि के लिए उपयुक्त समय बनाया है।

और इसलिए, जब आप समय पर कविता के माध्यम से अपना काम करते हैं, तो मैं उन सभी पांच इंद्रियों को ध्यान में रखने का सुझाव दूंगा जिनमें समय को समझा जा सकता है। और एक्लेसिएस्टेस की किताब में हेबेल अवधारणा और अन्य विचारों की तरह, ऐसा लगभग लगता है जैसे कोहेलेट इन सभी विचारों को एक साथ लपेट रहा है। जैसे ही एक बुद्धिमान व्यक्ति गिरी हुई दुनिया को पार करता है, बुद्धि को समय के बारे में ईश्वर की योजना, समय में उपयुक्तता के लिए

ईश्वर की योजना और समय के बारे में ईश्वर के अंतिम निर्धारण की समझ की आवश्यकता होती है।

भले ही एक बुद्धिमान व्यक्ति निर्णय लेता है, अंतिम परिणाम हमेशा ईश्वर पर निर्भर होते हैं। और इसलिए, भगवान निर्धारित करते हैं कि कुछ चीजें कब घटित होती हैं, भले ही मनुष्य को अनिश्चित भविष्य में नेविगेट करना और निर्णय लेना हो। हम यह भी पाते हैं कि कोहेलेट निश्चित रूप से पूरी कविता में विषय के रूप में मनुष्य पर जोर दे रहे होंगे।

और मनुष्य को एक बुद्धिमान प्राणी के रूप में, एक ऐसे व्यक्ति के रूप में मनुष्य की आवश्यकता है जो समय को नेविगेट करने और इन चीजों को समझने के लिए बुद्धि को लागू करता है। और इसलिए, आप यहां जो पाते हैं वह अंतर्निहित लचीलापन है जिसे कविता के माध्यम से अक्सर प्रयोग किया जाता है। और मुझे लगता है कि यही एक कारण है कि कोहेलेट इतनी सारी विचारों को संप्रेषित करने और इसे एक बहुत ही संक्षिप्त और संक्षिप्त संरचना में लपेटने में सक्षम होने के लिए इस तरह की कविता का उपयोग करता है।

अब श्लोक 9 से श्लोक 14 कविता पर समयानुसार टिप्पणी करते प्रतीत होते हैं। और इसलिए, श्लोक 9 के साथ हमारे पास फिर से एक प्रश्न है, कार्यकर्ता को यिट्रॉन क्या मिलता है जो उसके सभी अमलों से मिलता है ? जैसा कि हमने अध्याय 1 में पाया था, उसे श्लोक 3 में परिचयात्मक प्रश्न के साथ दोहराते हुए प्रतीत होता है। अब यह लगभग यहाँ एक अलंकारिक प्रश्न के रूप में कहा गया प्रतीत होता है।

दूसरे शब्दों में, मैं खोजना जारी रखता हूँ और मुझे अभी तक नहीं मिला है। मैंने बोझ देखा है, इनयोन , हमने इसे अध्याय 1 में श्लोक 10, या श्लोक 13 में देखा है। मैंने बोझ, इनयोन देखा है , जो भगवान ने पुरुषों पर डाला है, वह अर्थ जिसमें परे कुछ है, और फिर भी वह इन चीजों के समय को समझने में असमर्थ है और यहाँ तक कि कब्र से परे वास्तविकता को समझने में भी असमर्थ है।

उन्होंने अपने समय में हर चीज़ को सुंदर या उपयुक्त बनाया है। तो, परमेश्वर की चीज़ों की गतिविधि में, परमेश्वर की चीज़ों की डिज़ाइन में, समय में उपयुक्तता है, समय में नियमितता या स्थिरता है, और फिर भी मनुष्य इन चीज़ों को समझने में सक्षम नहीं है। उसने मनुष्यों के हृदयों में भी अनंत काल स्थापित किया है, फिर भी वे यह नहीं समझ सकते कि परमेश्वर ने आरंभ से अंत तक क्या किया है।

और इसलिए, एक संप्रभु ईश्वर द्वारा सीमा थोपने का यह उद्देश्य, ईश्वर मनुष्य को ऐसे स्थान पर रखता है जहाँ वह कभी भी उचित आधार प्राप्त नहीं कर पाता है, और उन सभी चीज़ों को समझ पाता है जो ईश्वर करता है। वैसे, एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में न केवल ज्ञान को अंततः मनुष्य के लिए कुछ भी स्थायी प्रदान करने में असमर्थ पाया गया है, बल्कि ज्ञान को अंततः ठोस तरीके से खोज करने और परमात्मा को समझने और प्रबंधित करने में भी असमर्थ पाया गया है। मुझे पता है कि पद 12 के साथ, हम यहां जो पाते हैं वह जीवन का आनंद लेने का एक और परहेज है, और इसलिए समय पर इन विचारों के भीतर, कोहेलेट फिर इस अगले खंड में कूद जाता है, मुझे पता

है कि पुरुषों के लिए खुश रहने से बेहतर कुछ नहीं है और जब तक वे जीवित रहें, भलाई करते रहें, कि हर कोई खाए-पीए और अपने सारे परिश्रम से सन्तुष्ट रहे।

यह भगवान का उपहार है। मैं जानता हूँ कि हर चीज के लिए, मैं जानता हूँ कि भगवान जो कुछ भी करता है वह हमेशा कायम रहेगा। पुनः, मनुष्य की गतिविधि के विपरीत, ईश्वर जो करता है वह सदैव कायम रहेगा।

इसमें न तो कुछ जोड़ा जा सकता है और न ही कुछ हटाया जा सकता है। परमेश्वर ऐसा इसलिए करता है ताकि मनुष्य उसका आदर करें। जैसा कि मैंने पहले के एक व्याख्यान में कहा था, धर्मग्रंथ में यह एक ऐसा स्थान है जिसके बारे में मुझे जानकारी है जहां इस प्रश्न का कुछ उत्तर मिलता है कि क्यों।

ऐसा क्यों है कि मनुष्य ईश्वर से ऊपर होने में सक्षम नहीं है? ऐसा क्यों है कि मनुष्य परमात्मा पर विजय पाने में सक्षम नहीं है? ऐसा क्यों है कि ईश्वर इस संसार में ऐसी चीजें घटित होने देता है जो मनुष्यों को अनिश्चित स्थिति में रखती हैं? जब मनुष्य को कुछ ऐसा पता चलता है जिसके बारे में उसने सोचा था कि वह इसका पता लगा सकता है, लेकिन फिर वह जांच करता है या उसे कोई अपवाद नजर आता है, जैसे कि धर्मी को वही मिल रहा है जिसके वह हकदार हैं, तो ये चीजें क्यों घटित होती हैं? खैर, अंततः, बहुत व्यापक अर्थ में, परमेश्वर ऐसा इसलिए करता है ताकि मनुष्य उससे डरे। फिर से, मैं इसे टॉवर ऑफ़ बैबेल स्थिति में उत्पत्ति अध्याय 11 में संरेखित करना चाहता हूँ। बेबेल की मीनार के निर्माण में मानव जाति ने जो करने का प्रयास किया वह था दिव्यता प्राप्त करना, दिव्यता को समझने के लिए कुछ समझ हासिल करना, ईश्वर पर भरोसा करना।

सभोपदेशक में हम जो पाते हैं वह यह है कि ईश्वर मानव जाति पर एक सीमा लगाता है ताकि मनुष्य कभी भी उससे आगे न रह सके और मनुष्य ईश्वर से डर सके या उसका आदर कर सके। यहां तक कि एक बुद्धिमान व्यक्ति भी यह पहचान लेगा कि अंततः अपनी बुद्धि के कार्यान्वयन के माध्यम से, वह कभी भी कोई गारंटीशुदा प्रतिभूतियां प्राप्त करने में सक्षम नहीं है। और हम इसे निम्नलिखित नीतिवचनों में प्रतिबिंबित होते देखते हैं।

जो कुछ है वह पहले ही हो चुका है और जो होगा वह पहले ही हो चुका है और ईश्वर अतीत का हिसाब लेगा। अब यह किसी के द्वारा किए गए कार्यों के संबंध में जवाबदेही की कुछ भावना को प्रतिबिंबित कर सकता है, लेकिन यहां हिब्रू भाषा अस्पष्ट है। जिस तरह से एनआईवी ने इसका अनुवाद किया है, उसका अर्थ यह होगा कि भगवान पिछली गतिविधियों को ध्यान में रखने जा रहे हैं, एक तरह से किसी तरह के फैसले के लिए मंच तैयार कर रहे हैं जो श्लोक 17 में आता है।

और मैंने सूर्य के नीचे कुछ और भी देखा। न्याय के स्थान पर दुष्टता थी। न्याय के स्थान पर दुष्टता का बोलबाला हो गया।

और इसलिए कोहेलेट का मानना है कि कुछ चीजें घटित होती हैं जिनका जीवन में भी कोई मतलब नहीं होता है, एक ऐसी दुनिया में जहां भगवान ने चीजों के समय में उपयुक्तता डिजाइन की है। ऐसा प्रतीत होता है कि ईश्वर के लिए उचित समय पर निर्णय देने के लिए उपयुक्त स्थान

का अभाव है। और इसलिए, मैंने अपने दिल में सोचा, और कोहेलेट यहां किसी प्रकार के मृत्युपरांत निर्णय की संभावना पर विचार करने जा रहे हैं।

परमेश्वर धर्मी और दुष्ट दोनों का न्याय करेगा, क्योंकि हर काम के लिए एक समय और हर काम के लिए एक समय होगा। और यहां की भाषा बिल्कुल वैसी ही है जैसा कि हम अध्याय 3 से श्लोक 1 में पाते हैं, मेरे विचार से यह इस पूरे खंड को एक साथ बुक और ब्रेकेट करने के लिए प्रतीत होता है। यह दिलचस्प है कि अध्याय 3 और श्लोक 17 में, किसी प्रकार के निर्णय की यह अपेक्षा अध्याय 12 के श्लोक 13 और 14 में पूरी पुस्तक के निष्कर्ष के साथ बहुत अच्छी तरह से संरेखित होती प्रतीत होती है।

वस्तुतः वहां की भाषा लगभग एक जैसी है। मैंने यह भी सोचा कि जहाँ तक मनुष्यों की बात है, परमेश्वर उनकी परीक्षा लेता है ताकि वे देख सकें कि वे जानवरों के समान हैं। मनुष्य का भाग्य पशुओं के समान है।

उन दोनों का वही भाग्य इंतजार कर रहा है जैसे एक मरता है, वैसे ही दूसरा भी मरता है। सबकी साँसें एक जैसी हैं। मनुष्य को पशु पर कोई लाभ नहीं है।

अब कोहेलेट यहां किसी प्रकार के धार्मिक अर्थ में विनाशवाद के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। वह कोई व्यवस्थित धर्मशास्त्र पाठ्यपुस्तक नहीं लिख रहा है। वह बस सूर्य के नीचे के परिप्रेक्ष्य से देख रहा है कि मनुष्य को जानवर से कोई लाभ नहीं है।

उसी अर्थ में जैसा उसने अध्याय 2 में किया था जहां वह कहता है कि मूर्ख की तरह बुद्धिमान व्यक्ति को भी मरना होगा। मृत्यु की अनिवार्यता के संदर्भ में मूर्खता पर बुद्धि का कोई लाभ नहीं है। अब अध्याय 3 में मृत्यु की अनिवार्यता के संदर्भ में मनुष्य को जानवर से कोई लाभ नहीं है। सभी एक ही स्थान पर जाते हैं।

सभी धूल से आते हैं और धूल में ही लौट जाते हैं। क्योंकि कौन जानता है कि मनुष्य की आत्मा ऊपर की ओर उठती है, और क्या पशु की आत्मा पृथ्वी में उतर जाती है। अब एक्लेसिएस्टेस अध्याय 12 और श्लोक 7 में उम्र बढ़ने की प्रक्रिया पर विचार करने के बाद, कोहेलेट यह मानते प्रतीत होते हैं कि मानव जाति अपने निर्माता के पास लौट आएगी, लेकिन इस बिंदु पर, वह बस धूल से धूल जैसी स्थिति देख रहे हैं।

वह देख रहा है कि मनुष्य जानवर की तरह ही आम कब्र में जाता है। तो, मैंने देखा कि एक आदमी के लिए खाने से बेहतर कुछ नहीं है या एक आदमी के लिए अपने काम का आनंद लेने से बेहतर कुछ नहीं है क्योंकि यही उसका भाग्य है। या जैसा कि मैंने पहले एक व्याख्यान में उनके आवांटेन के बारे में कहा था।

यह हिब्रू शब्द हेलेक है। और अब हम एक तरह से पढ़ रहे हैं और हमने इस बिंदु पर जीवन का आनंद लेने से जुड़े कई परहेज़ देखे हैं। मैंने आनंदमय जीवन के मूल भाव और आनंदमय जीवन के परहेजों और उनकी बढ़ती प्रकृति पर चर्चा करते हुए एक संपूर्ण व्याख्यान में समय बिताया और हमने कुछ प्रमुख शब्दों पर ध्यान दिया जो इन आनंदमय जीवन के परहेजों में नियोजित हैं।

हमने इन एन्जॉय लाइफ रिफ्रेन्स के कार्य को देखा। इस बिंदु पर मैं आपको केवल यह याद दिलाना चाहूंगा कि जीवन का आनंद लेने से बचना कोहेलेट के विचारों और जीवन की भारीपन पर टिप्पणियों के संदर्भ में स्थापित किया गया प्रतीत होता है। ऐसा नहीं है कि वह किताब के अंत तक इंतजार करते हैं और कहते हैं कि मैंने यह सारी कुरूपताएं और ये सभी समस्याएं देखी हैं जिन्हें मानव जाति और ज्ञान अंततः समझने और काबू पाने में असमर्थ थे और इसलिए मैं बस मान लेने जा रहा हूं कि अब आप भी एक तरह से पीछे हटें और जीवन का आनंद लें।

वह मूल रूप से यहाँ कह रहा है कि इस सब के बीच में भगवान फिर भी हेलेक की कृपा, आवंटन प्रदान करता है, जिससे मनुष्य जीवन में आनंद, सिम्वा पा सकता है। और यह किसी प्रकार के सुखवादी आनंद का विचार नहीं है, बल्कि यह किसी प्रकार का ईश्वर प्रदत्त आनंद है जिसे मनुष्य जीवन के बहुत ही सरल सुखों से प्राप्त करने में सक्षम है जो ईश्वर उसे प्रदान करता है। यह बड़े पैमाने पर परिप्रेक्ष्य का मामला है।

क्या कोई व्यक्ति उन खजानों को इकट्ठा करने के लिए प्रयास और परिश्रम करता है जिन्हें वह अपने साथ नहीं ले जा सकता है या क्या वह ईश्वर से जीवन के उपहार प्राप्त करता है और वर्तमान में उन उपहारों का लाभ उठाता है? यह ज्ञान का प्रश्न है और कोहेलेट ने जो प्रश्न सुझाया है वह ऐसा है जिसे एक बुद्धिमान व्यक्ति गले लगाएगा और खोजेगा। और इसलिए, वह पाता है कि मृत्यु की अनिवार्यता के प्रकाश में भी, एक व्यक्ति के लिए अपने काम का आनंद लेने से बेहतर कुछ भी नहीं है क्योंकि वह उसका आवंटन है, वह उसका उपहार है। क्योंकि कौन उसे दिखा सकता है कि उसके बाद क्या होगा? फिर, यह विचार यह है कि मनुष्य कब्र के पार कुछ भी नहीं देख सकता।

अब अध्याय चार के साथ, हम कोहेलेट के अवलोकनों के इस विचार और उन अवलोकनों के आधार पर उनके कुछ प्रतिबिंबों को जारी रखते हैं। और ये अवलोकन फिर से एक पतित दुनिया में जीवन के संबंध में सूर्य के नीचे के परिप्रेक्ष्य से किए गए हैं और कुछ चीजें जो प्रतिनिधि हैं और जीवन के तत्व या पहलू एक पतित दुनिया में रहते थे और निश्चित रूप से एक पतित दुनिया में हम सभी परिचित हैं पीड़ा के साथ. दुख एक ऐसी चीज़ है जो एक सामान्य अनुभव है।

यदि आपने कभी कष्ट नहीं सहा है तो संभवतः आप अभी बहुत छोटे हैं। आपके जीवन में कष्ट का अनुभव होने वाला है। और हम सभी दूसरों को जानते हैं जिन्होंने शायद हमसे कहीं अधिक बड़ी चीज़ें झेली हैं।

और हम जीवन को उस तरह के संदर्भ में देखते हैं और जाहिर है कि यह कुछ ऐसा नहीं है जो प्रोत्साहित करता है बल्कि यह हतोत्साहित करता है। और इसलिए, हम उस प्रतिबिंब आवाज़ को अध्याय चार से शुरू होने वाले कोहेलेट के शब्दों में पाते हैं। फिर, मैं ने दृष्टि की और सूर्य के नीचे हो रहे सारे जुलूम को देखा।

और इसलिए कोहेलेट एक ऐसी दुनिया में रहते थे जहां अन्याय आम था। हम आज ऐसी दुनिया में रहते हैं जहां अन्याय आम बात है। मेरा एक मित्र है जिसने एक विशेष देश में जीवन को एक ऐसे

जीवन के रूप में वर्णित किया है जहां लोगों को केवल रिश्तों का बजट बनाना पड़ता था क्योंकि यह एकमात्र तरीका था जिससे आप जीवन जी सकते थे।

और इसलिए, यह दुनिया भ्रष्टाचार की संस्कृति से भरी हुई थी। और हम आज जिस भी संदर्भ में जी रहे हैं, ऐसी स्थितियों को जानते हैं। और हम बड़ी पीड़ा की स्थितियों को जानते हैं।

आज जब मैं बोल रहा हूं तो पूरी दुनिया में शरणार्थी संकट हो रहे हैं। जो लोग विस्थापित हुए हैं। हम मानते हैं कि ये वे लोग हैं जिनके पास किसी भी प्रकार के सांत्वना देने वाले का अभाव है।

और इसलिए कोहेलेट इन चीजों का अवलोकन करता है। वह कहते हैं, मैंने मजलूमों के आंसू देखे। कि उनके पास कोई सांत्वना देने वाला नहीं है।

सत्ता उनके उत्पीड़कों के पक्ष में थी। यह उस प्रकार की भाषा है जो भविष्यवक्ताओं के बीच आम है क्योंकि उन्होंने शक्तिहीन और शक्तिशाली को देखा था और कैसे शक्तिहीन की कोई आवाज नहीं थी। और उनका कोई सांत्वना देनेवाला नहीं है।

और मैंने घोषणा की कि जो मरे हुए लोग मर चुके हैं, वे उन जीवितों की तुलना में अधिक खुश हैं जो अभी भी जीवित हैं। फिर, जरूरी नहीं कि कोहेलेट यहां जीवन की पवित्रता के खिलाफ कोई धार्मिक बयान दे रहे हों। वह बस इतना कह रहा है कि दुख जीने का कोई तरीका नहीं है।

अब फिर से, कोहेलेट 2 कुरिन्थियों अध्याय 1 को नहीं देख रहा है जो सभी आराम के भगवान के बारे में बात करता है। हम मानते हैं कि हम यहां दो अलग-अलग संदर्भों से निपट रहे हैं। सूर्य के नीचे के परिप्रेक्ष्य से कोहेलेट बस यह सुझाव दे रहा है कि यह जीने का कोई तरीका नहीं है।

और वह वास्तव में इससे काफी परेशान होगा। वह कहता है यह नर्क है। इ बात ठीक नै अछि।

परन्तु उन दोनों से उत्तम वह है, जो अब तक नहीं हुआ, और जो बुराई सूर्य के नीचे होती है, उसे न देखा। शायद अतिशयोक्तिपूर्ण, लेकिन कोहेलेट केवल यह कह रहा है कि यदि जीवन वह जीवन है जो केवल कष्ट सहने के लिए जीया जाता है, तो बेहतर है कि इसे न ही जीया जाए। जिसका कभी जन्म ही न हुआ हो।

और मैंने देखा कि मनुष्य का सारा श्रम और सारी उपलब्धियाँ अपने पड़ोसी के प्रति ईर्ष्या से उत्पन्न होती हैं। और इसलिए यह केवल महान चीजें इकट्ठा करने का मामला नहीं है, बल्कि उस प्रयास के पीछे की प्रेरणा, उस परिश्रम के पीछे, चाहे वह लालच हो, चाहे वह ईर्ष्या हो, कोहेलेट उन सबको भी भारी और मूर्खतापूर्ण कहने जा रहा है। एक आदमी का अपने पड़ोसी से ईर्ष्या करना, यह भी हवेल और हवा का पीछा करना है।

मूर्ख हाथ जोड़ लेता है और अपने आप को बर्बाद कर लेता है। परिश्रम और हवा के पीछे भागने वाली दो मुट्ठी से शांति के साथ एक मुट्ठी बेहतर है। अब कोहेलेट, बुद्धिमान व्यक्ति, यहां ज्ञान की कहावतें पेश करने के लिए काफी उपयुक्त होंगे।

और कोहेलेट मानते हैं कि हालांकि महान चीजों और खजाने को इकट्ठा करने का कोई स्थायी लाभ नहीं है, जैसा कि उन्होंने खुद भी अनुभव किया है, जोन्स के अगले दरवाजे का अनुसरण करते हुए, जैसा कि हम यहां कहना चाहेंगे, किसी के पड़ोसी से उस तरह की ईर्ष्या जो कुछ लोगों को प्रेरित करती है खजाने और धन का पीछा करना, कोहेलेट का कहना है कि यह मूर्खता है, लेकिन आइए केवल श्रम करना न छोड़ें। दूसरे शब्दों में, एक व्यक्ति को खाने में सक्षम होने के लिए काम करना चाहिए। और नीतिवचन की किताब के ज्ञान के अनुरूप, हम पाते हैं कि आलसी, आलसी आदमी को जीवन में कभी कुछ नहीं मिलता है।

और इसलिए, कोहेलेट कहने जा रहे हैं, यह एक मूर्ख है जो अपने हाथ मोड़ लेता है, यह पहचानते हुए कि ये सभी चीजें अंततः व्यर्थ हैं। फिर भी, मूर्ख वह होगा जो हाथ पर हाथ धरे रहेगा और कुछ नहीं करेगा, और उस आलस्य के कारण स्वयं को बर्बाद कर लेगा। लेकिन एक बुद्धिमान व्यक्ति चीजों की खोज में उन चीजों का पीछा नहीं करेगा जिन्हें वह अपने साथ नहीं ले जा सकता है।

और इसलिए शांति और संतुष्टि के साथ एक मुट्ठी परिश्रम और हवा के पीछे भागने वाली दो मुट्ठी से बेहतर है। ज्ञान का एक शब्द. फिर, मैंने सूरज के नीचे कुछ अर्थहीन या बोझिल चीज़ देखी।

वहाँ एक आदमी बिल्कुल अकेला था, उसका न तो कोई बेटा था और न ही कोई भाई, उसके परिश्रम का कोई अंत नहीं था। फिर भी उसकी आँखें अपनी सारी संपत्ति से संतुष्ट नहीं थीं। और इसलिए फिर, यह केवल ईर्ष्या का मामला नहीं है जो धन इकट्ठा करने के लिए प्रेरित करता है, जो अंततः केवल परिश्रम और मूर्खता है, बल्कि यह लालच भी है, जो व्यक्ति जो उसके पास है उससे कभी संतुष्ट नहीं होता है।

उन्होंने पूछा, मैं किसके लिए मेहनत कर रहा हूँ और मैं खुद को आनंद से क्यों वंचित रखता हूँ? अंततः, एक बुद्धिमान व्यक्ति यह पहचानता है कि केवल धन इकट्ठा करने के लिए लालच करना मूर्खता है। यह भी एक हेवेल, एक दयनीय व्यवसाय है। एक से दो बेहतर हैं क्योंकि उन्हें अपने काम का अच्छा प्रतिफल मिलता है।

यदि कोई गिर जाए तो उसका मित्र उसे उठाने में सहायता कर सकता है। परन्तु उस मनुष्य पर दया करो जो गिर जाता है और उसे उठाने वाला कोई नहीं होता। अब, कोहेलेट उन चीजों के बारे में इस विचार को लॉन्च करने जा रहा है जो इससे बेहतर हैं, और वह यह खोज करेगा कि इस दुनिया में एक आदमी के लिए अपने श्रम में साथी ढूँढना बेहतर है क्योंकि वह इसके माध्यम से सक्षम होने में सक्षम है इस जीवन में अधिक लाभ प्राप्त करें।

और इसलिए फिर, यह केवल लौकिक अर्थ में ज्ञान के शब्द हैं। यदि कोई गिर जाए तो उसका मित्र उसे उठाने में सहायता कर सकता है। परन्तु उस मनुष्य पर दया करो जो गिर जाता है और उसे उठाने वाला कोई नहीं होता।

इसके अलावा, अगर दो लोग एक साथ लेटेंगे तो वे गर्म रहेंगे। लेकिन कोई अकेले कैसे गर्म रह सकता है? यह आवश्यक रूप से यह नहीं कह रहा है कि, आप जानते हैं, अकेले रहना मूर्खता है और शादी करना या ऐसा कुछ भी करना बुद्धिमानी है। वह बस इतना ही कह रहा है, इस स्वर्गीय

दुनिया में जीवन साझा करने के लिए है और इस स्वर्गीय दुनिया में साझा जीवन वह जीवन है जो अधिक लाभप्रद है।

हालाँकि एक पर ज़बरदस्ती की जा सकती है, दो अपना बचाव कर सकते हैं। तीन धागों की डोरी जल्दी नहीं टूटती। दूसरे शब्दों में, यहाँ ज्ञान केवल यह बता रहा है कि पतित स्वर्ग की दुनिया में संख्या में ताकत है।

श्लोक 13 में अध्याय 4 की शुरुआत करते हुए, कोहेलेट एक प्रकार की उदाहरण कहानी शुरू करता है। फिर से, इस बेहतर-से-बेहतर मूल भाव को जारी रखते हुए। एक बूढ़े लेकिन मूर्ख राजा की तुलना में एक गरीब लेकिन बुद्धिमान युवा बेहतर है जो अब चेतावनी लेना नहीं जानता।

हो सकता है कि वह युवक जेल से राजशाही तक आया हो, या हो सकता है कि उसका जन्म उसके राज्य में ही गरीबी में हुआ हो। मैंने देखा कि सूर्य के नीचे रहने वाले और चलने वाले सभी लोग राजा के उत्तराधिकारी, युवक का अनुसरण करते थे। उनसे पहले जितने भी लोग थे उनका तो कोई अंत नहीं था लेकिन जो लोग बाद में आये वे उत्तराधिकारी से खुश नहीं थे।

यह भी हवा का पीछा करने वाला हेबेल है, है ना? रुआच। दूसरे शब्दों में, लोकप्रियता अंततः क्षणभंगुर थी, और भले ही एक व्यक्ति इस अवसर पर आगे बढ़ा और रैंकों में ऊपर उठ गया, अंततः इसके लिए किसी प्रकार की स्थायी सुरक्षा नहीं थी। इसे भी कोहेलेट हेबेल मानते हैं।

और इसलिए, खज़ाने और धन के संचय के साथ, ज्ञान के संचय और यहां तक कि शक्ति के संचय के साथ, अंततः इनमें से कोई भी चीज़ किसी भी प्रकार की स्थिरता प्रदान नहीं करती है, न ही इनमें से किसी भी चीज़ को कब्र से परे लाया जा सकता है। अध्याय 5 में, कोहेलेट एक दिव्य ईश्वर के प्रति श्रद्धा को लेकर कुछ विचार-विमर्श में लग जाता है। जब तुम परमेश्वर के भवन में जाओ तो अपने कदमों की रक्षा करो।

पास जाकर सुनो, बजाय इसके कि मूर्खों का बलिदान चढ़ाओ, जो नहीं जानते कि वे गलत काम करते हैं। दूसरे शब्दों में, एक बुद्धिमान व्यक्ति ने परमात्मा के समक्ष अपनी स्थिति को पहचान लिया। एक बुद्धिमान व्यक्ति के पास उचित मुद्रा होती है।

वास्तव में, हमने ईश्वर के भय पर एक पूर्व व्याख्यान में इसे देखा था, ज्ञान के विषय को ईश्वर का ज्ञान, एक अभिविन्यास, ईश्वर के प्रति एक उचित अभिविन्यास के रूप में वर्णित किया गया था। यहां हम कोहेलेट को ईश्वर के प्रति इस उचित अभिविन्यास और श्रद्धा का अधिक विस्तार से वर्णन करते हुए पाते हैं। अपने मुँह में जल्दी मत करो.

परमेश्वर के सामने कुछ भी कहने में अपने हृदय में उतावली न करो। ईश्वर स्वर्ग में है और आप पृथ्वी पर हैं, इसलिए दोनों के बीच वह महान खाई है जिसे कोहेलेट ईश्वर और मनुष्य के अपने धर्मशास्त्र में प्रतिबिंबित करता है। इसलिए अपने शब्दों को कम रखें, जैसा कि एक बुद्धिमान व्यक्ति सुझाव देगा।

यदि आप पहचानते हैं कि ईश्वर कौन है, तो आप उसके सामने आते समय सावधान रहेंगे। जैसे बहुत सारी चिन्ताएँ होने पर स्वप्न आता है, वैसे ही बहुत सारी बातें होने पर मूर्ख की वाणी आती है। और नीतिवचन की पुस्तक के अनुरूप, हम पाते हैं कि एक्लेसिएस्टेस, वह कोहेलेट, आपकी भाषा में जल्दबाजी करने की मूर्खता का वर्णन करता है, खासकर जब आप भगवान के सामने खड़े होते हैं।

जब आप भगवान से कोई मन्त्रत मांगते हैं तो उसे पूरा करने में देर न करें। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर के साथ उतावले मत बनो, और परमेश्वर के साथ तुच्छ मत बनो। उसे मूर्खों में कोई आनंद नहीं है।

अपनी प्रतिज्ञा पूरी करो. मन्त्रत मानकर उसे पूरा न करने से बेहतर है कि मन्त्रत न मानी जाए। फिर, बयानों से भी बेहतर।

अपना मुँह तुम्हें पाप की ओर न ले जाने दे। आप जानते हैं, जैसा कि नीतिवचन की पुस्तक में कहा गया है, हमारे मुँह के भीतर, हमारे शब्दों के भीतर बड़ी हानि और परेशानी करने और किसी को पाप की ओर ले जाने की महान क्षमता है। और मन्दिर के दूत का विरोध न करना, मेरी प्रतिज्ञा भूल थी।

परमेश्वर तुम्हारी बातों पर क्रोधित होकर तुम्हारे हाथ का काम क्यों नष्ट करे? बहुत सारे सपने देखना और बहुत सारे शब्द हेवेल हैं। फिर, नीतिवचन की शिक्षाओं के अनुरूप, अपने शब्दों में जल्दबाजी और भारीपन अक्सर मूर्खता की ओर ले जाता है। कोहेलेट कहेंगे कि शब्द भारी हैं।

वे अंततः व्यर्थ और क्षणभंगुर हैं। इसलिए, परमेश्वर का भय मानें। यदि आप किसी जिले में गरीबों को उत्पीड़ित देखते हैं, तो अध्याय चार में हमने अन्याय पर कोहेलेट के कुछ विचारों को देखा।

यहां हम एक राजनीतिक योजना में देखते हैं, कोहेलेट भी उत्पीड़न का निरीक्षण करता है। यदि आप किसी जिले में गरीबों पर अत्याचार होते देखते हैं और उन्हें न्याय तथा अधिकारों से वंचित किया जाता है, तो ऐसी बातों पर आश्चर्यचकित न हों। दूसरे शब्दों में, भ्रष्टाचार एक ऐसी चीज़ है जो एक गिरी हुई दुनिया में, एक पतित दुनिया में बहुत विशिष्ट है।

क्योंकि एक अधिकारी पर एक ऊँचे अधिकारी की दृष्टि होती है, और उन दोनों पर दूसरे और भी ऊँचे लोग नज़र रखते हैं। भूमि से वृद्धि सभी लोग लेते हैं। राजा स्वयं खेतों से लाभ कमाता है।

अब यहाँ श्लोक नौ में हिब्रू काफी अस्पष्ट है। कुछ अनुवादों में वास्तव में लिखा होगा कि राजा वह है जो चीजों को संतुलित करता है। दूसरे शब्दों में, भ्रष्टाचार को खत्म करने में राजा की भूमिका और सरकार की भूमिका की पुष्टि करना।

एनआईवी जैसे अन्य अनुवाद तो यहां तक कहते हैं कि भ्रष्टाचार की ऐसी संस्कृति में स्वयं राजा भी दोषी हो सकता है। हिब्रू आपको वहां किसी भी तरफ जाने की अनुमति देगा। एक राजा के रूप में कोहेलेट के लिए यह थोड़ा अजीब लगेगा, जैसा कि वह खुद का वर्णन करते हैं, राजा की गतिविधि को खारिज करना, इसलिए यह विचार करने योग्य बात है।

फिर भी, हिब्रू दुनिया के भीतर स्पष्ट भ्रष्टाचार की यह संस्कृति निश्चित रूप से श्लोक आठ और नौ में बहुत स्पष्ट प्रतीत होती है। श्लोक दस. जो कोई भी पैसे से प्यार करता है उसके पास कभी भी पर्याप्त पैसा नहीं होता है।

मेरा मतलब है, इस प्रकार का वर्णन अधिकांश संस्कृतियों में बेहद अमीर लोगों का है, जो हमेशा अधिक से अधिक संग्रह करने की कोशिश करते हैं। जो कोई धन से प्रेम करता है वह अपनी आय से कभी संतुष्ट नहीं होता। वहां थोड़ी सी विडंबना है।

दुनिया में ज्यादातर लोग सोचते हैं कि काश मेरे पास थोड़ा और होता, काश मेरे पास थोड़ा और होता, तो मैं संतुष्ट हो जाता। कोहेलेट, बुद्धिमान व्यक्ति, इस तरह की सोच में मूर्खता को पहचानता है कि हमेशा कुछ और होता है जिसे नश्वर मनुष्य हासिल करना चाहता है। यह भी बुरा है, क्योंकि उन चीज़ों की उपलब्धि में, कब्र से परे कुछ भी नहीं रहता है।

जैसे-जैसे वस्तुएँ बढ़ती हैं, वैसे-वैसे उनका उपभोग करने वाले भी बढ़ते हैं। कुछ हद तक एक विडंबना यह है कि हममें से अधिकांश ने अनुभव किया है कि जैसे-जैसे हम बड़े होते गए हैं और शायद थोड़े अधिक धनवान या थोड़े अधिक आर्थिक रूप से स्थिर हो गए हैं। हम पाते हैं कि हमारी संपत्ति में वृद्धि के साथ-साथ बिलों में भी वृद्धि हुई है, और खर्चों में भी वृद्धि हुई है, और इसलिए ऐसा लगता है कि यह कभी भी पर्याप्त नहीं है, और यह बस उस चीज़ का पीछा करने की खोज का वर्णन करता है जिसे मानव जाति कभी भी पूरी तरह से हासिल नहीं कर सकती है। इसकी संतुष्टि।

और उनसे स्वामी को क्या लाभ, सिवाय इसके कि वह उन पर अपनी दृष्टि बनाए रखे? पहले के एक व्याख्यान में, मैं एक सज्जन का वर्णन कर रहा था जिन्हें मैं एक बार जानता था, जिन्होंने अपने जीवन के बाद के वर्षों में, यहां तक कि जब उन्होंने देखा कि मृत्यु कुछ ही समय में आने वाली थी, तो उन्हें अपने बैंक स्टेटमेंट को देखने में बहुत खुशी मिली। और वह सब व्यर्थ था। वह बैंक का कोई भी पैसा कब्र से आगे कहीं भी अपने साथ नहीं ले जा सका।

मजदूर चाहे थोड़ा खाए या ज़्यादा, उसकी नींद मीठी होती है, लेकिन अमीर आदमी की बहुतायत उसे सोने नहीं देती। फिर, एक बड़ी विडंबना यह है कि जिस मजदूर के पास बहुत कम है वह रात में शांति से आराम कर पाता है, जबकि अमीर आदमी जो अधिक से अधिक के लिए उत्सुकता से प्रयास करता है, वह पूरी तरह से चिंतित बुलबुले में है, और उसे नींद में भी आराम नहीं मिल पाता है। श्लोक 13.

मैंने एक गंभीर बुराई देखी है, फिर से एक नकारात्मक निर्णय, सूर्य के नीचे, धन अपने मालिक की हानि के लिए जमा किया जाता है। तो, यह केवल बिना कुछ लिए धन इकट्ठा करने की बात नहीं है, बल्कि अब आपको विडंबना का सामना करना पड़ा है, यह विडंबनापूर्ण स्थिति है कि धन केवल अपने मालिक को नुकसान पहुंचाने के लिए एकत्र किया जा रहा है, या किसी दुर्भाग्य के कारण धन खो गया है। और हम सभी शायद ऐसे लोगों को जानते हैं जिन्होंने किसी ऐसी चीज़ के

कारण चीज़ें खो दी हैं जो उनका अपना हिस्सा नहीं था या अपनी ज़िम्मेदारी या अपने स्वयं के कार्यों के कारण नहीं।

कभी-कभी भ्रष्ट समाज में लोगों के साथ धोखाधड़ी की जाती है। लोग इस उथल-पुथल भरी दुनिया में चीज़ें खो देते हैं और कोहेलेट इससे परेशान है। वह इसे बहुत बड़ा दुर्भाग्य कहेंगे।

ताकि जब उसका बेटा हो, ताकि जब उसका बेटा हो, तो उसके लिए कुछ भी न बचे। पहले, कोहेलेट इस तथ्य से परेशान थे कि एक व्यक्ति बहुत अधिक धन के साथ मर सकता है और इसे किसी ऐसे व्यक्ति के पास छोड़ सकता है जो उसके बाद आता है और इसे बर्बाद कर देता है। अब आपको कोई ऐसा व्यक्ति मिल गया है जिसकी बड़ी संपत्ति दुर्भाग्य के कारण नष्ट हो गई है, और अब वह अपने बाद आने वाले को विरासत भी नहीं दे सकता है।

मूल रूप से, यहां मुद्दा यह है कि एक विषम दुनिया में, मनुष्य इस दुनिया में कुछ भी नहीं लेकर आता है, और कुछ अर्थों में, अंततः, वह कुछ भी नहीं लेकर जाता है। नंगा मनुष्य अपनी माता के गर्भ से आता है, और जैसे आता है, वैसे ही चला जाता है। वह अपने श्रम से कुछ भी नहीं लेता जिसे वह अपने हाथों में ले सके।

इस अर्थ में धन और खजाना स्वर्ग है। यह भी एक गंभीर बुराई है। मनुष्य जैसे आता है, वैसे ही चला जाता है।

चूँकि वह हवा के लिए परिश्रम करता है तो उसे क्या लाभ होता है? जिस चीज़ को आप अपने साथ नहीं ले जा सकते उसके पीछे मेहनत करना बहुत बड़ी मूर्खता है। अपने पूरे दिन वह घोर निराशा, कष्ट और क्रोध के साथ अंधकार में भोजन करता है। जैसे गरीबी या किसी प्रकार के भयानक कष्ट के कारण कष्ट में जीवन जीना एक दुखद बात है, यहां तक कि जब कोई इस दुनिया में समृद्ध होता है, अगर इस दुनिया में समृद्धि की प्रक्रिया के माध्यम से उन्हें निराशा, पीड़ा और क्रोध के अलावा कुछ नहीं मिलता है, कोहेलेट कहता है कि यह जीने का कोई तरीका नहीं है।

किसी बुद्धिमान पुरुष या बुद्धिमान महिला के लिए इस दुनिया में रहने का कोई तरीका नहीं है, खासकर इस तथ्य को देखते हुए कि भगवान ने आनंद के अवसर प्रदान किए हैं। और इसलिए, वह एक बार फिर जीवन के आनंद की पुष्टि करता है। तब मुझे एहसास हुआ कि एक आदमी के लिए यह अच्छा और उचित है कि वह खाए-पीए और सूर्य के नीचे अपने कठिन परिश्रम में संतुष्टि पाए, बजाय झुंझलाहट और हताशा के, उन साधारण उपहारों में संतुष्टि पाए जो भगवान आपको देते हैं।

क्योंकि यही उसका हिस्सा है, उसका भाग्य है, उसका आवंटन है। बुद्धिमान व्यक्ति उन अवसरों को देखेगा और जानेगा जो भगवान उसे आनंद पाने के लिए प्रदान करते हैं। इसके अलावा, जब भगवान किसी भी आदमी को धन और संपत्ति देता है, तो फिर, कोहेलेट की सोच के अनुसार, धन अपने आप में एक बुरी चीज़ नहीं है, और उसे उनका आनंद लेने में सक्षम बनाता है, यदि आप उन चीज़ों का आनंद लेने में सक्षम हैं जो भगवान ने आपको उपहार में दी हैं। उसके आबंटन, उसके हेलोट को स्वीकार करो, और उसके काम में खुश रहो, यह ईश्वर का उपहार है।

यह परिप्रेक्ष्य की बात है। वह शायद ही कभी अपने जीवन के दिनों पर विचार करता है, क्योंकि ईश्वर उसे हृदय की प्रसन्नता में व्यस्त रखता है, न कि झुंझलाहट और हताशा में, आनंद में और हृदय में प्रसन्नता में व्यस्त रखता है। लेकिन कोहेलेट आगे बढ़ता है।

मैंने एक और बुराई देखी है, बुराइयों या गंभीर निर्णयों की एक लंबी सूची में जो कोहेलेट इस गिरी हुई दुनिया में देखता है, मैंने सूर्य के नीचे एक और बुराई देखी है, और यह मनुष्य पर भारी पड़ती है। फिर, इनयोन, यह भारी बोझ। परमेश्वर मनुष्य को धन, संपत्ति, और सम्मान देता है, ताकि उसे किसी भी चीज़ की कमी न हो जो उसका दिल चाहता है, लेकिन भगवान उसे उनका आनंद लेने में सक्षम नहीं बनाता है।

अब यह कुछ दिलचस्प है, है ना? आपके पास एक ऐसी स्थिति है जहां कोहेलेट एक ऐसे व्यक्ति को देखता है, जो अपने स्वयं के कार्यों के कारण, अपने धन और अपने खजाने का आनंद लेने में असमर्थ है, जिसे उसने जीवन भर एकत्र किया है, लेकिन अब आपके पास एक ऐसी स्थिति है जहां भगवान को ऐसा लगता है मनुष्य इस जीवन में प्राप्त धन और चीज़ों का आनंद लेने में सक्षम नहीं होता है, और इसके बजाय एक अजनबी उनका आनंद लेता है। यह हेवेल है, एक गंभीर बुराई है। एक बार फिर, कोहेलेट इस तथ्य से परेशान है कि, यहां तक कि ज्ञान के कार्यान्वयन के माध्यम से, यह जानना कि क्या उचित और अच्छा है, और यह जानना कि भगवान से उपहार प्राप्त करने में सबसे अच्छा कैसे सक्षम होना चाहिए जो एक आदमी को आवंटित किया जा सकता है, वह पाता है कि कभी-कभी भगवान देता है और फिर ले लेता है।

यह काफी हद तक उस तरीके के अनुरूप है जिस तरह से अय्यूब ने अय्यूब की किताब के आरंभ में समझाया था। आप पाते हैं कि यह भी, कोहेलेट समझ नहीं सकता। ईश्वर किसी मनुष्य को केवल उससे छीनने के लिए ही क्यों देगा? आप दुखद स्थितियों के बारे में सोचें, उदाहरण के लिए, जहां एक भारी दुनिया में एक आदमी एक पत्नी की तलाश कर सकता है, और भगवान अंततः उसे पत्नी देने के लिए ही उसे एक पत्नी देता है, या शायद एक जोड़ा बच्चे की तलाश करता है, और भगवान उन्हें एक बच्चा देता है, और आपको आश्चर्य होता है कि भगवान द्वारा उन्हें वह बच्चा देने का क्या अर्थ है, केवल यह देखने के लिए कि वह बच्चा किसी दुर्घटना या किसी अन्य चीज़ में दुखद रूप से खो गया है।

कोहेलेट इस दुनिया में इस प्रकार की चीज़ें देखता है, कि एक बुद्धिमान व्यक्ति के रूप में, वह इसका पता नहीं लगा सकता है। एक आदमी के सौ बच्चे हो सकते हैं और वह कई वर्षों तक जीवित रह सकता है, फिर भी चाहे वह कितने भी लंबे समय तक जीवित रहे, अगर वह अपनी समृद्धि का आनंद नहीं ले सकता है और उसे उचित दफन नहीं मिलता है, तो मैं कहता हूं कि एक मृत बच्चा उससे बेहतर है। कोहेलेट जीवन में संभावनाओं को खोजने के लिए ज्ञान के कार्यान्वयन के बारे में है, और यदि एक महिला उन चीज़ों में आनंद नहीं पा सकती है जो भगवान ने उन्हें दी है, तो कोहेलेट उस बारे में नहीं है।

यह बिना मतलब के आता है, अंधेरे में चला जाता है, और अंधेरे में इसका नाम छिप जाता है। हालाँकि इसने कभी सूरज नहीं देखा या कुछ भी नहीं जानता था, फिर भी इसमें उस आदमी की तुलना में अधिक आराम है, जो कुछ उस भाषा को प्रतिबिंबित करता है जिसे हमने अध्याय 4,

छंद 2 और 3 में देखा था। भले ही वह दो बार एक हजार साल जी लेता है लेकिन ऐसा करने में विफल रहता है। उसकी समृद्धि का आनंद लें, सभी एक ही स्थान पर न जाएं, जिससे मृत्यु की अनिवार्यता के उस मूल भाव को फिर से बल मिलता है। मनुष्य की सारी चेष्टा उसके मुँह के लिये होती है, तौभी उसकी भूख कभी तृप्त नहीं होती।

फिर से, अध्याय 5 और श्लोक 10 पर विचार करें, जहां एक आदमी के पास कभी भी पर्याप्त नहीं होता है। मूर्ख पर बुद्धिमान व्यक्ति का क्या लाभ? अध्याय 2 और श्लोक 14 और 15 पर विचार करते हुए, जहां मृत्यु की अनिवार्यता के कारण, मूर्ख की तुलना में बुद्धिमान व्यक्ति के लिए कोई लाभ नहीं था। एक गरीब आदमी को यह जानने से क्या लाभ होता है कि उसे दूसरों के सामने कैसा व्यवहार करना चाहिए? दूसरे शब्दों में कहें तो कोई फायदा नजर नहीं आता।

आँख जो देखती है वह बेहतर है, संतुष्टि, भूख को भटकने से, यह भी उधेड़बुन और हवा का पीछा करना है। फिर, कुछ अर्थों में, जब कोई व्यक्ति जीवन को बुद्धिमानी से चलाना सीख जाता है, तब भी अंततः हम सभी एक ही स्थान पर जा रहे हैं। जो कुछ भी अस्तित्व में है उसका नामकरण पहले ही किया जा चुका है।

अध्याय 1 पर विचार करते हुए, सूर्य के नीचे कुछ भी नया नहीं है। मनुष्य क्या है यह ज्ञात हो चुका है। कोई भी व्यक्ति उस व्यक्ति से मुकाबला नहीं कर सकता जो उससे अधिक शक्तिशाली है। अध्याय 1 और श्लोक 15 में याद रखें, जो पहले से ही टेढ़ा हो चुका है उसे मनुष्य सीधा नहीं कर सकता।

मैं यहां कोहेलेट की सोच के अनुरूप सोचता हूं, यह ईश्वर है। जब ईश्वर आदेश देता है और जब ईश्वर योजना बनाता है, तो मनुष्य, अंततः, ईश्वर ने जो डिज़ाइन किया है उसे लेने में और उसे इस तरह से बदलने में असमर्थ होता है कि मनुष्य के पास परमात्मा पर शक्ति हो। जितने अधिक शब्द, उतना ही कम अर्थ, और इससे किसी को क्या लाभ होता है, अध्याय 5 पर विचार करते हुए, जहां मूर्ख को ऐसे व्यक्ति के रूप में वर्णित किया गया है जिसके पास बहुत सारे शब्द हैं।

क्योंकि कौन जानता है कि जीवन में मनुष्य के लिए क्या अच्छा है। यदि कोहेलेट यिन्नोन को खोजने में सक्षम नहीं था, तो वह अंततः टोव की तलाश कर रहा है। वह इन चीजों की खोज और जांच कर रहा है जैसा कि हमने विशेष रूप से अध्याय 4, 5, और 6 में उसके विभिन्न विचारों के माध्यम से देखा है।

कुछ दिनों के दौरान, वह एक छाया की तरह गुजरता है, जो इस क्षणभंगुर नश्वर अस्तित्व में जीवन की क्षणभंगुर प्रकृति की ओर इशारा करता है। उसे कौन बता सकता है कि उसके जाने के बाद सूरज के नीचे क्या होगा? दूसरे शब्दों में, कोहेलेट खुद को फिर से दोहराता है। मनुष्य भविष्य में क्या होगा, विशेषकर उसके अस्तित्व से परे भविष्य के बारे में कुछ भी नहीं जानता है।